thearyasamaj.org

ओ३म्
आर्य जगत्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 08 मार्च 2015 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार 08 मार्च 2015 से 14 मार्च 2015

चै.कृ 03 ● वि० सं०–2071 ● वर्ष 79, अंक 147, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 191 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,115 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी. द्वारका (दिल्ली की) 'रजत जयंती' पर हुआ भव्य समारोह

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सैक्टर–द्वारका, नई दिल्ली, में रजत जयंती समारोह *'स्योना – अ रे ऑफ लाइट'* बड़े हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आर्य रत्न श्री पूनम सूरी, प्रधान डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अन्य सम्माननीय अतिथियों में विद्यालय के चेयरमैन श्री टी.आर गुप्ता, डॉ. आर. एस. शर्मा, महा सचिव डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति, डॉ निशा पेशीन, निदेशक डी.ए.वी. प्रबंधकर्त्री समिति, श्रीमती वीना टंडन, उपनिदेशक शिक्षा निदेशालय, एवं स्कूल के प्रबंधक श्री नानक चंद उपस्थित थे। विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती मोनिका मेहन ने सभी सम्माननीय अतिथियों का स्वागत पौधा अर्पित कर के किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ गणमान्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। विद्यालय के चेयरमैन श्री टी.आर.गुप्ता जी ने अपने स्वागत भाषण से सभी अतिथियों एवं अभिभावकों को संबोधित किया। अपने संबोधन में उन्होंने अभिभावकों को अपने बच्चों के साथ मूल्यवान समय बिताने की सलाह दी जिससे कि बच्चों में आपसी प्रेम व सहयोग की भावना बढ़े। तत्तपश्चात् विद्यार्थियों द्वारा रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में नन्हे–मुन्ने बच्चों के थिरकते कदम, सालसा, शास्त्रीय नृत्यों में भरतनाट्यम, ओडिशा एवं कथक तथा भारतीय लोक–नृत्यों में बिहू, बम्बू, गुजराती नृत्य एवं भांगड़ा ने तो दर्शकों का मन मोह लिया। कार्यक्रम में प्रमुख आकर्षण का केन्द्र नृत्य–नाटिका 'सर्वे भवन्तु सुखिनः – यज्ञ द्वारा प्रकृति का संरक्षण' रही, जिसमें लगभग 300 विद्यार्थियों ने अपनी अप्रतिम प्रस्तुति दी। मुख्य अतिथि आर्य रत्न श्री पूनम सूरी जी ने शैक्षणिक एवं सहशैक्षणिक क्षेत्रों के मेधावी छात्रों को प्रमाणपत्र तथा ट्रॉफी देकर सम्मानित किया। वर्ष 2013–2014 के छात्र सूर्यांश को उसकी उपलब्धि के लिए एम.एल खन्ना स्वर्णपदक से सम्मानित किया। श्री पूनम सूरी जी ने अपने भाषण में विद्यालय की अभूतपूर्व उपब्धि के लिए बधाई दी तथा प्रधानाचार्या जी के कुशल नेतृत्व की प्रशंसा की। उन्होंने डी.ए.वी. द्वारा चारित्रिक शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि डी.ए.वी. विद्यालयों का यह प्रयास रहा है। कि समाज को केवल इंजीनियर, डॉक्टर, प्रबंधक ही नहीं बल्कि अच्छे इंसान भी दे सकें। उन्होंने अपने आशीर्वचनों के द्वारा विद्यालय के स्वर्णिम भविष्य की शुभकामनाएँ दीं।

कार्यक्रम के अंत में विद्यालय के प्रबंधक श्री नानक चंद ने सभी का आभार व्यक्त किया तथा विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती मोनिका मेहन ने सभी शिक्षकों तथा स्टाफ सदस्यों और अभिभावकों को कार्यक्रम की सफलता के लिए धन्यवाद दिया।

डी.ए.वी. कोटा में महर्षि दयानन्द जयंती की पूर्व संध्या पर हुआ यज्ञ

आर्य समाजडी.ए.वी. स्कूल कोटा व जिला सभा, कोटा के संयुक्त तत्वाधान मे महर्षि दयानन्द सरस्वती जयंती की पूर्व संध्या पर स्कूल परिसर में स्थित यज्ञशाला में देवयज्ञ किया गया। यज्ञ के मुख्य यजमान आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा तथा यजमान स्कूल की प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम एवं आर्य विद्वान डी.ए.वी. स्कूल के धर्मशिक्षक शोभाराम आर्य के पौराहित्य में यज्ञ सम्पन्न हुआ।

इस यज्ञ में आर्य समाजों के प्रतिनिधि व विद्यालय के स्टॉफ तथा छात्र छात्राओं ने यज्ञ में आहुतियां डालकर परमपिता परमात्मा से विश्व कल्याण एवं सुख समृद्धि की कामना की।

मुख्य यजमान परमात्मा अर्जुनदेव चढ्डा ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती महान् समाज सुधारक थे। जिन्होंने अंधविश्वास एवं सामाजिक कुरीतियों को जड़ से उखाड़ने का काम किया तथा वैदिक संस्कृति की पुनर्स्थापना की। साथ ही समाज में महिलाओं को समानता का अधिकार सर्वप्रथम स्वामी दयानन्द ने दिलाया।

कार्यक्रम की अध्यक्षा श्रीमती सरिता रंजन गौतम ने कहा कि महर्षि दयानन्द नारी शिक्षा के प्रबल समर्थक थे और उन्होंने देश में सर्वप्रथम नारी पाठशाला जालंधर में स्थापित की थी।

महर्षि दयानन्द वेदप्रचार समिति के अध्यक्ष अरविन्द पाण्डेय ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने 'वेदों की ओर लौटो' का नारा दिया तथा जर्मनी से वेद मंगवाकर उनका हिन्दी अनुवाद किया।

श्री शोभाराम ने कहा कि स्वामी दयानन्द के आदर्शों पर चलते हुए उनके शिष्य महात्मा हंसराज जी लाहौर में स्थापित डी.ए.वी. स्कूल प्रथम मुख्याध्यापक बने। और आज पूरे देश में डी.ए.वी. की 800 से भी अधिक स्कूल व कॉलेज हैं जहां वैदिक संस्कार दिए जा रहे हैं। शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

ओ३म्

आर्य जगत्

सप्ताह रविवार 08 मार्च, 2015 से 14 मार्च, 2015

तेंतीस वीर्य

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

इदं वर्चो अग्निना दत्तमागन्, भर्गो यशः ओजो वयो बलम्।
त्रयस्त्रिंशद् यानि च वीर्याणि, तान्यग्निः प्रददातु मे।।

अथर्व 19.37.1

ऋषिः **अथर्वा**। देवता **अग्निः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● (**अग्निना**) अग्नि–स्वरूप परमेश्वर से (**दत्तं**) दिया हुआ (**इदं**) यह (**वर्चः**) ब्रह्मवर्चस, (**भर्गः**) तप (**यशः**) यश, (**सहः**) साहस, (**ओजः**) ओज, (**वयः**) आयुष्य [और] (**बलं**) बल (**आगन्**) [मुझे] प्राप्त हो। (**यानि च**) और जो (**त्रयस्त्रिंशत्**) तेंतीस (**वीर्याणि**) वीर्य [हैं], (**तानि**) उन्हें (**अग्निः**) परमेश्वर (**मे**) मुझे (**प्रददातु**) प्रदान करे।

● परमेश्वर सर्वशक्तिमान् हैं, सब गुणों के आगार हैं। इधर मैं अत्यन्त अल्पशक्ति हूँ और अनेक न्यूनताएँ एवं अभाव मेरे अन्दर विद्यमान हैं। पर मैं इनसे निराश नहीं हूँ। परमेश्वर से सम्बन्ध जोड़कर मैं भी शक्तियों और गुणों का पुंज बन सकता है। मेरी कामना है कि मैं वर्चस्वी प्रभु से ब्रह्मवर्चस प्राप्त करूँ, ब्रह्मतेज से देदीप्यमान बन जाऊँ, जिससे कोई भी ब्रह्म–विरोधी भावनाएँ मुझे पराजित न कर सकें। मैं तपस्वी प्रभु से तपस्या की शिक्षा लूँ, इतना तप करूँ कि मेरे तप से समस्त पाप–वासनाएँ भस्म हो जाएँ। मैं यशस्वी प्रभु को यशः प्राप्ति के लिए अपना आदर्श बनाऊँ। उसके समान मैं भी अनुपम कीर्ति से जगमगाऊँ। मैं साहसी प्रभु से साहस प्राप्त करूँ। साहस ही मनुष्य को जटिल से जटिल कठिनाइयों से पार लगाता है। मैं ओजस्वी प्रभु से ओज ग्रहण करूँ, क्योंकि ओज ही शरीर एवं आत्मा का धन है। मैं आयुष्मान् प्रभु से दीर्घ आयुष्य प्राप्त करूँ, जिससे चिरकाल तक समाज की सेवा कर सकूँ। मैं बलवान प्रभु से शिक्षा लेकर अपने अन्दर मनोबल और दैहिक बल का संचय करूँ, जिससे मानसिक एवं बाह्य शत्रुओं से लोहा ले सकूँ।

ज्योतिर्मय परमात्मा मुझे वे तेंतीस वीर्य प्रदान करें जो मानव की पूर्णता के लिए आवश्यक हैं। ये तेंतीस वीर्य हैं दस इन्द्रिय–बल, चार अहंकार–चतुष्टय के बल, एक आत्मा का बल, पांच प्राणबल, पांच अन्नमयादि कोषों के बल, आठ अणिमादि योगसिद्धियों के बल। मानव–शरीर के अन्दर स्थित ये इन्द्रियादि यदि बलवान् नहीं होते, तो ये मनुष्य को पथभ्रष्ट करने में कारण बनते हैं। निर्बल इन्द्रियाँ अन्तर्मुखता को छोड़कर भोग–विषयों की ओर आकृष्ट होने लगती है। निर्बल आत्मा कामादि रिपुओं के वशीभूत हो जाता है। निर्बल प्राणपान आदि अपनी प्राणन आदि क्रियाओं को साधु प्रकार से न कर सकने के कारण शरीर को रूग्ण एवं क्षीण कर देते हैं। निर्बल अन्नमयादि कोष आत्मोन्नति के सोपान न बनकर आत्मा को गिरानेवाले बन जाते हैं। निर्बल अणिमालघिमा आदि योगसिद्धियाँ परमात्म–साक्षात्कार में सहायक न होकर मनुष्य को सांसारिकता में ही फँसाये रखती हैं। अतः तेज और बल के परम स्रोत अग्नि प्रभु से मैं अपनी सम्पूर्ण विनम्रता के साथ याचना करता हूं कि वे मुझे उक्त तेंतीस प्रकार के बलों से बनाकर पूर्णता प्रदान करें। ❑

वेद मंजरी स

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

एक ही रास्ता

● महात्मा आनन्द स्वामी

पिछले अंक में बात हो रही थी कि 'स्व' का अर्थ है 'हे प्रभु! मुझे सुख दे।' अच्छी प्रार्थना है यह। अवश्य करनी चाहिए। परंतु इसके साथ ही यह भी प्रयत्न होना चाहिए कि मैं भी किसी को सुख दूँ। शास्त्रों ने कहा, 'उठो, बढ़ो।' ऐसा स्थान खोजो सुन्दर मकान बनाने के लिए जहाँ लोग न हों। व्याधियाँ न हों। वेद ने मकान बनाने के लिए नहीं कहा। वह तो कहता है, ऐसा स्थान ढूँढो जो स्वास्थ्य देने वाला हो।

वेद कहता है, सदा प्रसन्न रहो। जो प्रसन्न नहीं रहता, उसे गृहस्थ आश्रम में प्रविष्ट होने का कोई अधिकार नहीं। ईश्वर सुखों को देने वाला है। सुख का अर्थ है जिसकी इंद्रियां अच्छी हैं। दुःख का अर्थ है जिसकी इंद्रियां बुरी हैं। अच्छी का अर्थ है इच्छा के अनुकूल, और बुरी का अर्थ है इच्छा के प्रतिकूल। जिसकी इंद्रियां वश में हैं वह सुखी है और जिसकी इंद्रियां वश में नहीं हैं, वह दुःखी है। इंद्रियों को वश में रखना ही सुख है। उनका वश में न होना सुख नहीं, सदा दुःख का कारण होता है। यदि तुम सुख चाहते हो तो अपने लिये सुख पैदा करने का यत्न करो। यह है–'भूः, भुवः, स्वः' का अर्थ।

शास्त्रों में लिखा है जो व्यक्ति एक बार प्रयाग में नहा ले उसके जन्म–जन्म के दुःख कट जाते हैं। जिस प्रयाग की बात शास्त्र कहते हैं वह इलाहाबाद का प्रयाग नहीं अपितु माथे का प्रयाग है। दोनों भौंहों के मध्य में भृकुटि है जहाँ गंगा, यमुना, सरस्वती के रूप में पिड़ा, पिंगला, नाड़ियां आकर मिलती हैं। यहां जो स्नान कर लेता है, यहां ध्यान लगाकर जो भूः भुवः स्वः कहता है, उसके सभी कष्ट और क्लेश दूर हो जाते हैं।

अब आगे...

छठा दिन

मेरी प्यारी माताओ तथा सज्जनो!

आप अगर कभी पण्डित जवाहरलाल जी को मिलें, पण्डित जी आपसे पूछें, "बताओ क्या माँगते हो?" और आप कहें कि, "मुझे एक पाव रसगुल्ले मँगवा दो।" तो बताइये कि लोग आपको क्या कहेंगे? जवाहर जी तो आपको बहुत–कुछ दे सकते हैं। सारे देश की शक्ति इनके हाथ में है। देश का भला वे कर सकते हैं, आपका भविष्य बना सकते हैं। उनके एक पाव रसगुल्ले माँगना यदि पागलपन नहीं तो और क्या है? इसी प्रकार भगवान् के सामने जाकर, यदि आप उन वस्तुओं को माँगने लगें जो निश्चय ही नष्ट होने वाली हैं, तो बताइये क्या ठीक होगा? भूः भुवः स्वः का वर्णन करते हुए कल मैंने आज्ञाचक्र में बने प्रयाग की बात कही थी। वहाँ पहुँचकर जब कहो, "हे प्राणप्यारे! दुःखों को दूर करने वाले! सूखों को देने वाले भगवान्!" और जब वह प्रकाश जाग उठे, अन्धकार दूर करता हुआ सूर्य सामने आ जाये, तब ऐसी वस्तु न माँगों जो नष्ट होने वाली है। उस वस्तु को माँगों जो नष्ट नहीं होती; जो आगे ले जाती है। यह वस्तु है मेधा।

भूर्भवः स्वः– इन तीन व्याहृतियों में एक रहस्य है। उसे समझने की चेष्टा कीजिये। इसमें भगवान् को पहले दुःखों को दूर करने वाला काहा गया है, दुःखों को दूर करने की प्रार्थना की गई है; फिर सुखों को देने वाला कहा गया, सुख देने की याचना की गई है– ऐसा क्यों? हम प्रतिदिन पढ़ते हैं–

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।
यद् भद्रं तन्न आसुव।।

इसमें भी भगवान् को सविता कहा गया है। इसमें भी पहले 'विश्वानि दुरितानि परा सुव' दुनिया–भर की बुराईयों को, कष्टों को, क्लेशों को और दुःखों को परे हटाने की प्रार्थना की गई है। इस प्रार्थना के पश्चात् कहा गया है– जो भद्र है, जो कल्याण करने वाला और सुख देने वाला है, वह हमारे पास ले आओ।

ऐसी बात कही गई तो क्यों? पहले दुःखों और पापो को दूर करने के लिए प्रार्थना की गई तो किसलिए? इसलिए कि जब तक अन्तःकरण का बर्तन शुद्ध न हो, तब तक अमृत उसमें डाला नहीं जा सकता। कहीं फूल बिखेरने हों तो वहाँ से पहले गन्दगी साफ़ कर दी जाती है। कहीं सुन्दर फ़र्श बिछाना हो तो पहले झाड़ू देकर भूमि को शुद्ध कर लिया जाता है।

एक महात्मा थे। किसी घर में भिक्षा माँगने गये। घर की स्वामिनी देवी ने भिक्षा दी; हाथ जोड़कर बोली, "महात्मा, कोई उपदेश दो!" महात्मा ने कहा, "आज नहीं, कल उपदेश दूँगा।" देवी ने कहा, "तो

thearyasamaj.org

कल भिक्षा भी यहीं से लीजिये।" दूसरे दिन महात्मा भिक्षा लेने के लिए चलने लगे तो कमण्डल में कुछ गोबर भर लिया, कुछ कूड़ा; कुछ करकट। कमण्डल को लेकर देवी के घर पहुँचे। देवी ने उस दिन बहुत अच्छी खीर बनाई थी उनके लिए। उसमें बादाम डाले थे, पिस्ता डाला था। महात्मा ने आवाज़ दी, "ओ३म् तत् सत्।" देवी खीर का कटोरा लेकर बाहर आई। महात्मा ने अपना कमण्डल आगे कर दिया। देवी उसमें खीर डालने लगी तो देखा कि वहाँ गोबर और कूड़ा भरा पड़ा है। रुककर बोली, "महाराज, यह कमण्डल तो गन्दा है।" महात्मा ने कहा, "हाँ, गन्दा तो है, इसमें गोबर है, कूड़ा है, परन्तु अब करना क्या है? खीर भी इसी में दो।" देवी ने कहा, "न महाराज! इसमें डालने से तो खराब हो जायेगी। मुझे दीजिये यह कमण्डल, मैं इसे शुद्ध कर लाती हूँ।" महाराज बोले, "अच्छा माँ! तब डालोगी खीर, जब कूड़ा-करकट साफ़ हो जाये?" देवी बोली, "हाँ।" महात्मा बोले, "यही मेरा उपदेश है, मन में जब तक चिन्ताओं का कूड़ा-करकट और बुरे संस्कार का गोबर भरा है, तब तक उपदेश के अमृत का लाभ नहीं होगा। उपदेश का अमृत प्राप्त करना है तो इससे पूर्व मन को शुद्ध करना चाहिए, चिन्ताओं को दूर कर देना चाहिए, बुरे संस्कारों को समाप्त कर देना चाहिए, तभी ईश्र का नाम चमक सकता है, सुख और आनन्द की ज्योति जाग सकती है।"

जो अच्छा है, जो कल्याण करने वाला और सुख देने वाला है, वह मेरे पास आये, उससे पूर्व यह आवश्यक है कि जो बुराई है, जो अंधकार है, वह दूर चला जाये। 'विश्वानि देव' के मन्त्र में भी यही बात हैं, भूर्भुवः स्वः में भी यही बात है। ज्ञान, कर्म, उपासना तीनों का निचोड़ है यह, तीनों का सार।

यह एक भेद है। भूर्भुवः स्वः का अब एक और भेद सुनिये। ठोस रूप में यह भूर्भुवः स्वः ही प्राण, अपान और व्यान है। यह शरीर कैसे चलता है? यह संसार कैसे चलता है? प्राण, अपान और व्यान से। ओ३म् या गायत्री का जाप करता हुआ उपासक जब अपने अन्दर प्राण का सम्बन्ध संसार के समष्टिरूप प्राण जोड़ लेता है, तब वह एक नहीं रहता, सारा संसार एक हो जाता है। हर वस्तु के साथ उसका सम्बन्ध हो जाता है जिसमें प्राण है और प्राण के बिना इस संसार में कोई भी वस्तु नहीं। वैदिक तत्त्व-ज्ञान के अनुसार यह सारा संसार एक विराट् परमपुरुष का शरीर है। वेद पुकारकर कहता है-

पुरुष एवेदं सर्व यद् भूतं यच्च भाव्यम्।

यजु. 31।2।।

'पुरुष ही है यह सब-कुछ, जो दिखाई देता है और अनुभव होता है।' सारा संसार एक ही शरीर है। इसीलिए आर्य लोग सारे संसार को अपना देश कहते थे। छोटे-छोटे देश बनाने का उन्होंने कभी प्रयत्न नहीं किया। छोटे-छोटे देश बनाने की बात उन लोगों ने चलाई जो आर्य-संस्कृति और आर्य-विचारधारा को भूल गये। जब तक यह संस्कृति और विचारधारा फिर से अपनाई नहीं जायेगी, जब तक यह सारा संसार एक राष्ट्र नहीं बन जायेगा, तब तक अन्तर्राष्ट्रीय झगड़े समाप्त नहीं होंगे। दुनिया आज शान्ति-शान्ति चिल्लाती है। शान्ति का सही मार्ग इस वैदिक तत्त्व-ज्ञान को समझना और आर्य-विश्वास को अपनाना है कि यह सारा संसार एक ही पुरुष का शरीर है। भूर्भुवः स्वः का उपासक क्रियात्मक रूप में ही यह अनुभव करता है कि सब जगह, सारे संसार में एक ही प्राण है; किसी के साथ उसकी शत्रुता नहीं। बृहदारण्यक उपनिषद् में आया है कि भूर्भुवः स्वः के द्वारा इस समष्टि या विराट् पुरुष की उपासना कैसे करनी चाहिए; लिखा है कि 'भूः' कहते ही यह सारी पृथिवी उपासक के सामने आ जानी चाहिए। पृथिवी और उसके प्राणी, चाहे मनुष्य हों या पशु-पक्षी हों या जलचर, वृक्ष हों या पौधे, नदियाँ हों या पहाड़, सागर हों या मरुस्थल- यह सारी पृथिवी, प्राणों से भरी हुई पृथिवी उसके समक्ष आनी चाहिए। भुवः कहते ही चन्द्रलोक उसके सामने आना चाहिए, स्वः कहते ही सूर्यलोक। जो पिण्ड में है, हमारे में है, वही ब्रह्माण्ड में, इस सारे विश्व में है। इसलिए बृहदारण्यक का ऋषि कहता है-

"जो ब्रह्माण्ड के विराट् और सत्यरूप पुरुष की भूर्भुवः स्वः के द्वारा प्रार्थना करता है, वह पाप को मार भगाता है पाप उससे दूर चला जाता है..."

पाप को नष्ट करने का कितना सरल उपाय है यह! यह है भूर्भुवः स्वः की महिमा! यह है उसका वह रहस्य जिसे समझ लेने के बाद ज्ञात होता है कि इसके अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं है।

अब गायत्री मन्त्र के अगले भाग की बात सुनिये। पिछली बार दिल्ली में जो व्याख्यान मैंने दिये, उनमें गायत्री मन्त्र के सम्बन्ध में बहुत-सी बातें बताई थीं, उन्हें अब दोहराऊँगा नहीं। गायत्री की महिमा के सम्बन्ध में भी कुछ बातें कही थीं, उन्हें भी दोहराना नहीं है। कुछ नई बातें सुनिये! श्रीमद्-भागवत के दसवें स्कन्ध के दसवें अध्याय में महात्मा शुकदेव जी महाराज परीक्षित को बताते हैं कि श्रीकृष्ण महाराज का दिन-भर का प्रोग्राम क्या था। शुकदेव जी ने कहा, "श्रीकृष्ण सूर्य निकलने से दो घड़ी पूर्व उठते थे। नित्यक से छुट्टी पाकर स्नान करते थे। अच्छे कपड़े पहनते थे। इतनी देर में हवन की सामग्री तैयार करके रख दी जाती थी। तब वे यज्ञ करते थे, प्रतिदिन करते थे, आहुतियाँ देते थे, फिर सन्ध्या करते थे, और फिर देर तक एक ही आसन में बैठे-बैठे गायत्री का जाप करते थे।"

सुनो, ऐ श्रीकृष्ण की पूजा करनेवालो! भगवान् श्रीकृष्ण भी प्रतिदिन यज्ञ करते थे, प्रतिदिन गायत्री का जाप करते थे। यह बात मैं नहीं कहता, श्रीमद्भागवत् पुराण कहता है। भागवत् पुराण के बाद देवी भागवत पुराण की बात सुनिये, उसमें लिखा है-

सर्ववेदसारभूता गायत्र्यास्तु समर्चना।
ब्रह्मादयोऽपि सन्ध्यायां तां ध्यायन्ति जपन्ति च।।

'गायत्री की आराधना सब वेदों का साररूप है। ब्रह्मा और दूसरे लोग भी सन्ध्या के समय गायत्री का ध्यान करते थे, उसका जाप करते थे।'

यह एक भेद है। भूर्भुवः स्वः का अब एक और भेद सुनिये। ठोस रूप में यह भूर्भुवः स्वः ही प्राण, अपान और व्यान है। यह शरीर कैसे चलता है? यह संसार कैसे चलता है? प्राण, अपान और व्यान से। ओ३म् या गायत्री का जाप करता हुआ उपासक जब अपने अन्दर प्राण का सम्बन्ध संसार के समष्टिरूप प्राण जोड़ लेता है, तब वह एक नहीं रहता, सारा संसार एक हो जाता है। हर वस्तु के साथ उसका सम्बन्ध हो जाता है जिसमें प्राण है और प्राण के बिना इस संसार में कोई भी वस्तु नहीं। वैदिक तत्त्व-ज्ञान के अनुसार यह सारा संसार एक विराट् परमपुरुष का शरीर है। वेद पुकारकर कहता है-

और केवल भगवान् कृष्ण और ब्रह्मा ही नही, शिव जी महाराज भी गायत्री का जाप करते थे। माता पार्वती ने एक बार उनसे पूछा, "महाराज! आप इतनी सिद्धियाँ प्राप्त कर चुके हैं, किस प्रकार ये सिद्धियाँ आपको प्राप्त हुई हैं?" शिव जी महाराज जी बैठे थे कैलास पर, पार्वती उनके साथ थीं, उस समय उन्होंने प्रश्न पूछा। मैं वह स्थान देखकर आया हूँ। कितना सुन्दर स्थान है वह, यह तो मैं वर्णन नहीं कर सकता। 18,500 फ़ीट ऊँची चोटी है वहाँ। तीन दिन तक उसके गिर्द घूमना पड़ता है। बर्फ़ से सोया तो नहीं जाता, किसी प्रकार कम्बल ओढ़कर पड़े रहते हैं लोग। मैंने भी यह यात्रा की। तीसरे दिन हम गौरीकुण्ड के किनारे पहुँचे। गौरीकुण्ड की लम्बाई-चौड़ाई एक मील है, मानसरोवर जितनी बड़ी तो नहीं, फिर भी काफ़ी बड़ी है। बर्फ़ जमी रहती है उसके ऊपर। बर्फ़ को तोड़कर एक कमण्डल जल लेकर मैंने अपने ऊपर डाला। शरीर सुन्न हो गया। दूसरा कमण्डल डालने की हिम्मत नहीं हुई। कपड़े पहनकर भजन करने को बैठ गया। भजन करके तो सामने कैलास था- इतना सुन्दर, इतना आकर्षक और इतना विशाल कि उसका चित्र खींचने को शब्द नहीं मिलते। दुनिया में बहुत-से सुन्दर दृश्य हैं- हरे-भरे लहलहाते हुए खेत, फूलों से लदे हुए पहाड़, आकाश को छूते हुए वृक्ष, पागल होकर नाचती हुई सागर की लहरें, बड़े-बड़े आबशार (Falls), बड़ी-बड़ी झीलें। परन्तु कैलाश की उस चोटी से अधिक सुन्दर भी कोई वस्तु है, यह मैं जानता नहीं। ऐसा लगता है कि भारत में और दूसरे देशों में जो मन्दिर बनाये गए, वे शायद इसी कैलाश को देखकर बनाये गए। चाँदी-जैसा बर्फ़ का चमकता हुआ मन्दिर है वह। दोनों ओर बर्फ़ है, परन्तु बीच में थोड़ा-सा स्थान खाली है जहाँ काली चट्टान दिखाई देती है। मैंने अपने गाइड से पूछा, "वह स्थान खाली क्यों है?" उसने कहा, "लोगों का विश्वास है कि उस जगह बैठकर भगवान् शिव और पार्वती बातें किया करते थे।" मैंने कहा, "मुझे वहाँ ले चल, मैं उस स्थान पर बैठना चाहता हूँ।" वह बोला, "नहीं स्वामी जी! वहाँ जाना बहुत भयप्रद है। बहुत दूर नहीं वह स्थान, यहाँ से केवल 1000 फ़ीट ऊँचा है, परन्तु मार्ग कोई नहीं, जाना असम्भव है।" मैंने कहा, "अरे भाई, असम्भव क्या है? चल मेरे साथ।" वह बोला, "मेरे छोटे-छोटे बच्चे हैं, मर गया तो क्या होगा?" मैंने कहा, मैं ही क्या अनाथ हूँ? चल तुझे पारितोषिक दूँगा।" कुछ पारितोषिक के लोभ से, कुछ मेरे आग्रह के कारण अन्त में वह चला। तीन घन्टे के प्रयत्न के पश्चात् अन्त में हम एक हज़ार फ़ीट ऊँचे उस स्थान पर पहुँचे जहाँ कभी शिव और पार्वती बैठा करते थे। उस स्थान को देखते ही मैं बैठ गया। गाइड ने कहा, "उठो! चलो सन्ध्या होनेवाली है। यहीं बैठे रहे तो बर्फ़ में जम जाओगे।" मैंने हँसते हुए कहा, "बर्फ़ में जमने से न डर, बैठ जा तू भी। तू शिव बन जा, मैं पार्वती बनता हूँ। आओ दोनों बैठकर बातें करें।" वह बोला, "आपको तो मौत के आगे हँसी सूझती है।" मैंने कहा, "मृत्यु के समाने भी हँसी न सूझे तो फिर हँसने का लाभ क्या!" थोड़ी देर बैठा वहाँ। भगवान् का नाम लिया, फिर नीचे आ गये हम दोनों।

उसी स्थन पर भगवान् शिव बैठे थे जब पार्वती ने उनसे पूछा, "महादेव! इतनी सिद्धियाँ आपको प्राप्त हैं, वे किस प्रकार प्राप्त हुईं?" शिव ने कहा, "देवि, जितनी भी सिद्धियाँ मुझे प्राप्त हैं, वे सब गायत्री की उपासना से मिलती हैं।"

शेष अगले अंक में....

thearyasamaj.org

आर्य वीर दल की स्थापना तथा उसके कार्यों का इतिहास

● खुशहाल चन्द्र आर्य

यह लेख मैने स्वामी देवव्रत जी (प्रधान संचालक, सार्वदेशिक आर्य वीर दल) की पुस्तक "सार्वदेशिक आर्य वीर दल" शीर्षक से यह जान कर उद्धृत किया है कि सार्वदेशिक आर्य वीर दल आर्य समाज का एक सेवाभावी सैनिक संगठन है, इसकी स्थापना व कार्यों की जानकारी प्रत्येक आर्य समाजी को होनी चाहिए। इस उद्देश्य से यह लेख लिखा है, जो इसी भाँति है।

धर्मान्ध लोगों द्वारा हमारे नेताओं के बलिदान दिये जाने पर उनका प्रतिकार करने के लिए सन् 1927 ई. में महात्मा हंसराज की अध्यक्षता में दिल्ली में एक विराट महासम्मेलन हुआ। जिसके परिणाम स्वरूप 26 जनवरी सन् 1929 ई. को आर्य–रक्षा–समिति के सुदृढ़ अंग के रूप में आर्य वीर–दल की स्थापना की गई। उस समिति के अध्यक्ष महात्मा नारायण स्वामी ने दस हजार आर्य वीर और दस सहस्त्र रुपये एक वर्ष में एकत्रित करने की प्रतिज्ञा की। आर्यों में इतना अधिक उत्साह था कि कुछ ही मासों में ये दोनों प्रतिज्ञाएँ पूरी हो गईं।

इसी मध्य महाशय राजपाल का लाहौर में धर्मान्ध लोगों द्वारा वध कर दिया गया। इन्ही परिस्थितियों में महात्मा नारायण स्वामी की अध्यक्षता में सन् 1931 ई. में दूसरे आर्य–महासम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें आर्यवीर–दल की शाखा प्रत्येक प्रान्त, नगर और आर्य समाजों में स्थापित करने का आदेश किया गया जिसमें आर्यवीर–दल के नियमित संचालन के लिए बलिष्ठ आर्यवीरों को अन्य स्थानों पर प्रशिक्षण के लिए भेजा गया। सर्वत्र छात्रधर्म का प्रचार–प्रसार होने से आर्य नेताओं पर होने वाले आक्रमण रुक गये। सिंहों की दहाड़ सुनकर गीदड़ माँदों में जा छिपे। हिन्दू एवं आर्यजनों के उत्सव, मेले, शोभायात्रा निर्विघ्न सम्पन्न होने लगे।

सारे देश में स्वतन्त्रता–संग्राम का बिगुल बजा हुआ था। "करो या मरो" महात्मा गान्धी के इस उद्घोष से देश के नवयुवकों का खून खौल उठा। विदेशी वस्त्रों की होली जलाना, रेल की पटरियो को उखाड़ना, टेलिफोन के खम्भों को उखाड़ना और डाकखाने तथा सरकारी कार्यालयों को अग्नि के अर्पण करना आदि का अभियान सर्वत्र जोर पकड़ गया। ऐसे अवसर पर आर्यवीर कब चुप बैठने वाले थे। शिविर समाप्त होने पर बहुत–से आर्य वीर इस संग्राम में कूद पड़े। तब से लेकर हैदराबाद रियासत के भारत में विलय होने तक का इतिहास आर्यवीरों के त्याग, बलिदान एवं शौर्य से भरा पड़ा है। धीरे–धीरे पेशावर, जम्मु, कोहाट से कलकत्ता तक आर्यवीर दल का जाल–सा बिछ गया। इसके कार्यों को दो भागों में बाँटा जा सकता है।

सुरक्षा :– दिल्ली आर्यवीर–दल ने सन् 1927 ई० या इसके आस–पास मुस्लिम गुण्डो से हिन्दुओं की रक्षा, गढ़मुक्तेश्वर तथा यमुना के घाटों पर, मेलों के अवसर पर जनता की सेवा, सहायता और सुरक्षा का प्रशंसनीय कार्य किया जिससे इसकी उपयोगिता सभी को प्रतीत हो गई।

सन् 1946 ई० में पश्चिमी पंजाब में हजारा, रावलपिण्डी तथा जेहलम जिलों में, जहाँ पर मुस्लिम संख्या अधिक थी, हिन्दुओं पर भयानक अत्याचार हुए। सैकड़ों स्त्रियों ने अपने स्तीत्व की रक्षा के लिए कुओं में छलांग लगाई। सैकड़ों युवक वीरता पूर्वक लड़ते हुए शहीद हुए। उस समय रावलपिण्डी, नौशेरा तथा अन्य स्थानों के आर्य–वीरों ने अपनी जानपर खेलकर हिन्दुओं की रक्षा व सेवा की।

भारत की स्वाधीनता से पूर्व ही सीमा प्रान्त की हिन्दू–जनता को जीवन–मरण के संघर्ष से गुजरना पड़ा। पूर्वी बंगाल के नोआखली जिले में सोहरावर्दी के संकेत से मुस्लिम गुण्डे बंगाल के हिन्दुओं का निर्मम संहार कर रहे थे। सार्वदेशिक सभा द्वारा आदेश मिला कि 200 मौत से खेलने वाले आर्यवीरों का दल पूर्वी बंगाल भेजा जाए। अलवर के दल को सैनिक भेजने का आदेश हुआ। सभा प्रधान के सामने एक सहस्त्र आर्यवीर खड़े कर दिये गये कि इनमें से किन्हीं 200 का चयन कर लें। प्रत्येक आर्यवीर जाने के लिए आग्रह कर रहा था। श्री ओम प्रकाश जी त्यागी के नेतृत्व में आर्यवीर नोआखली के लिए रवाना हुए। वहाँ जाकर रेलवे स्टेशन से उतर कर प्रभावित क्षेत्र में अपना शिविर लगाने से पूर्व बम विस्फोट किया। गुण्डों को यह समझते देर न लगी कि यह घटना कुछ और संकेत कर रही है। उनकी हिम्मत उधर देखने की भी नहीं हुई।

पास में ही श्रमती सुचेता कृपलानी के नेतृत्व में कांग्रेस का शिविर लगा हुआ था। इसके कार्यकर्त्ता अहिंसा का मिथ्या राग अलापते और आर्यवीर दल को गालियाँ देते थकते न थे। एक दिन मुस्लिम गुण्डों ने काँग्रेस शिविर पर धावा बोल दिया और सुचेता जी के बालों को पकड़ कर घसीटते हुए अपने क्षेत्र की ओर ले जाने लगे। सूचना पाकर आर्यवीर दल के सेनापति श्री ओमप्रकाश जी सशस्त्र आर्यवीरों के साथ गुण्डों पर टूट पड़े और उनका सारा नशा झाड़ दिया। सुचेता जी खुले बाल धूल लिप्त लिए, भूमि पर पड़ी थीं। श्री ओमप्रकाश जी को सामने खड़ा देख आँखो में पानी भरकर बोली, "भैया! तुम आ गये"। प्रत्युत्तर में इन्होंने कहा कि गुण्डों द्वारा बहन का अपमान होता देखकर महर्षि दयानन्द के सैनिक कैसे चुप रह सकते हैं? ऐसे ही अनेक अवसरों पर अपनी जान हथेली पर रखकर आर्यवीरों ने न जाने कितनी माताओं–बहिनों की जान बचाई।

पूर्वी बंगाल से आये हिन्दू–शरणार्थियों का शिविर सीमा के पास लगा हुआ था। पाकिस्तान की सीमा केवल 100 मीटर दूर थी। यहाँ पाकिस्तानी अंसार गुण्डों से अनेक बार आर्यवीरों की झड़पें हुईं और उन्हें पीछे धकेल दिया गया। ऐसी ही घटना जयनगर के समीप हुई। पाकिस्तान की सीमा को पार करके अंसार गुण्डों ने भारतीय चौकी पर आक्रमण करके अपना झण्डा गाड़ने का प्रयास किया। इस समय शिविर में भारतीय पुलिस के केवल चार सिपाही थे जिनमें से एक रोगी था। श्री ओम प्रकाशजी सेनापति आर्य वीर दल, उस शिविर को सम्भाल रहे थे। दोनों ओर से कुछ घण्टों तक गोलियाँ चलीं। अपनी दाल गलती न देख अंसार गुण्डे मैदान छोड़कर भाग खड़े हुए। उनसे छीना पाकिस्तानी झण्डा अब भी आर्य वीर–दल के शौर्य की याद दिला रहा है।

हैदराबाद के मुक्ति–संग्राम का प्रारम्भ तो आर्य वीरों ने ही किया था। तीन आर्यवीरों ने निजाम की कार पर बम फेंकने की योजना बनाई। योजनानुसार बम फेंका गया, परन्तु वह फटा नहीं। इससे पहले कि दूसरी कार्यवाही की जाए निजाम के अंगरक्षकों ने नारायणराव को दबोच लिया। उसे भंयकर यातनाएँ दी गईं, परन्तु उसने साथियों के नाम नहीं बतलाए।

उमरी कस्बे में हैदाराबाद के निजाम का बैंक था। आर्यवीरों ने योजनाबद्ध विधि से उसमें से 30 लाख रुपये लूटकर सरदार पटेल के सुपुर्द कर दिये। इसी भाँति उद्गीर के भाई श्यामलाल धारूर, जिला बीड़ के नवयुवक काशीराम, हुमनाबाद के शहीद वेदप्रकाश, श्री कृष्णाराव जी ईंटकर और अन्य बहुत–से आर्यवीरों ने स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए अपने जीवन की आहुतियाँ देकर हैदराबाद को मुक्त कराने का श्रेय प्राप्त किया। हैदराबाद में पुलिस एक्शन के समय सारा कार्यभार आर्यवीरों पर ही था। इसलिए सरदार पटेल को कहना पड़ा कि यदि आर्य समाज का सहयोग न होता तो सरकार को हैदराबाद को विजय करना कठिनतम होता। वस्तुतः इस रियासत की विजय का सम्पूर्ण श्रेय आर्यवीरों को ही जाता है।

सेवा कार्यः– सेवा कार्य वही कर सकता है जो शरीर से बलिष्ठ तथा अहंकार से शून्य और मानवीय गुणों से युक्त हो। आर्यवीर इस कार्य में भी पीछे नहीं रहे। कुछ प्रसंग इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। सन् 1936 ई. में मध्य भारत में दुर्भिक्ष पड़ा। सार्वदेशिक सभा ने आर्यवीरों के निरीक्षण में रतलाम, उज्जैन, झाबुआ, दोहद व मेघनगर में सहायता केन्द्र खोले। यह कार्य डेढ़ मास तक चला। सन् 1942–43 ई० में बंगाल में भयंकर अकाल पड़ा, जिसमें 45 लाख लोग मौत के मुख में चले गये। आर्य प्रतिनिधि सभा पन्जाब एवं सार्वदेशिक सभा के तत्त्वावधान में श्री खुशहालचन्द (आनन्द स्वामी) की अध्यक्षता में आर्यवीरों को सहायतार्थ भेजा गया। आर्यवीरों ने लाखों लोगों में भोजन, वस्त्र और औषधि वितरण का कार्य किया। इसी भाँति देश–विभाजन के समय अनेक सहायता शिविरों का सञ्चालन किया। स्वतन्त्रता–प्राप्ति के पश्चात् 1950 में असम की बाढ़, छेकड़ी (राजस्थान) और मोखी (गुजरात) के जलप्लावन में भी आर्यवीरों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इसी भाँति उत्तरकाशी एवं गुजरात के भूकम्प और उड़ीसा के तूफान में भी आर्यवीरों ने प्रशंसनीय कार्य किया है।

आर्यवीर दल का इतिहास त्याग, बलिदान, देशभक्ति, सेवा और शौर्य गाथा से परिपूर्ण है। जिन्होंने धर्म एवं राष्ट्र रक्षा के लिए अपना सर्वस्व अर्पण किया। उन परिचित एवं अनाम शहीदों को हमारा शत्–शत् प्रणाम।

मुझे यहाँ बड़े दुःख के साथ लिखना पड़ रहा है कि आर्य वीर इतना अधिक काम इसलिए कर पाये कि उस समय आर्य समाज संगठित थी। एक सार्वदेशिक योग्य, त्यागी, तपस्वी, निःस्वार्थी, परोपकारी, समर्पित आर्यजनों की थी। तभी उस समय आर्य समाज की धाक थी। सरकार और जनता, आर्य समाज को सम्मान व श्रद्धा की दृष्टि से देखती थी। आज की भाँति यदि तीन सार्वदेशिकें स्वार्थी और पद–लोलुप जनों की उस समय भी होती तो कोई काम रक्षा व सेवा का नहीं कर पाती। इसलिये आर्य समाज को यदि वेद प्रचार व राष्ट्र रक्षा का कार्य करना है तो उसे पुनः संगठित होना पड़ेगा और तीन सार्वदेशिकों की जगह एक सार्वदेशिक अच्छे आर्यजनों की बनानी पड़ेगी। अन्यथा आर्य समाज अवनति को ही प्राप्त होता रहेगा।

180 महात्मा गांधी रोड़ (दो तल्ला)
कोलकत्ता–700007

thearyasamaj.org

उत्कृष्ट शङ्का समाधान

● स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

शंका – आपने कहा था, हम लोग मोक्ष से धरती पर आए हैं। अगर हमें फिर मोक्ष मिले तो हमें मोक्ष में भी इस बात का भय, दु:ख, चिंता लगी रहेगी कि हम कहीं वापस धरती पर न चले जाएं?

समाधान– चिंता बिलकुल नहीं लगेगी। एक व्यक्ति ने अहमदाबाद से दिल्ली तक रेलवे आरक्षण कराया। उसको सीट मिल गई। उसको पता है कि मैं अहमदाबाद से बैठूँगा और दिल्ली स्टेशन पर जाकर मुझे रेलगाड़ी छोड़ देनी है। जैसे–जैसे दिल्ली का स्टेशन नजदीक आएगा तो क्या उसकी चिंता बढ़ती है? नहीं न। तो मोक्ष में भी चिंता क्यों बढ़ेगी? उसको पता है कि इतने समय का मोक्ष है और अब इतना समय पूरा होने वाला है। जब रेलगाड़ी छोड़ने में आपको चिंता नहीं है तो मोक्ष छोड़ने में भला क्यों चिंता होगी?

अगर आप बुद्धिमान हैं और न्याय से चलते हैं तो आपको चिंता नहीं होगी। अगर आप पक्षपाती हैं, अन्याय प्रिय हैं तो आपको चिंता होगी। मोक्ष वाला व्यक्ति पक्षपाती तो होता नहीं है। वो तो न्यायप्रिय होता है और वो न्याय से चलता है। भई जितना कर्म किया था, उसका फल पूरा हो गया, फिर कर्म करो, फिर मोक्ष में आ जाना। इसलिए कोई चिंता नहीं होगी।

शंका– कोई धनी व्यक्ति जो कि गरीबों का खून चूसकर धन एकत्र करता है, यदि कोई व्यक्ति उसे लूटकर वो धन गरीबों में बाँट देता है तो क्या उसे भी ईश्वर के द्वारा दंड मिलेगा? इन दोनों में से अधिक दंड किसको मिलेगा?

समाधान– इसका समाधान है:–

गरीबों को शोषण करना, खून चूसना यह भी एक अपराध है। **सेठ ने जो अपराध किया, उसका दंड सेठ को मिलेगा।**

किसी ने सेठ का धन लूट लिया, वह भी अपराध है। उसे लूटने का भी दंड मिलेगा।

वह सेठ खून चूसता है या जो भी करता है, इसका जिम्मेदार दूसरा व्यक्ति नहीं है। इसका जिम्मेदार वही व्यक्ति है, जो शोषण कर रहा है। **आपको यह अधिकार नहीं है कि आप सेठ की संपत्ति को लूट (चुरा) लें।**

यह राजा (सरकार) का काम है या परमात्मा का काम है, वो उसको दंड देगा। दूसरा व्यक्ति कानून हाथ में नहीं ले सकता।

दूसरा व्यक्ति अगर गरीबों को दान देना चाहता है तो अपना धन कमाकर दान दे। उसे किसने रोका है? लूट करके दान देना उसका अधिकार नहीं है। अपना धन कमाओ और गरीब को दो, कौन रोकता है?

दान देना 'शुभ कर्म' है, लूटमार करना 'अशुभ कर्म' है। दोनों कर्म अलग–अलग हैं। दोनों का अलग–अलग फल है। अब किसको अधिक दंड मिलेगा, यह तो भगवान जाने। पूरा–पूरा हमको नहीं मालूम।

शंका– क्या कभी चर–अचर जीव जब मनुष्य योनि में थे, एक से अधिर बार मोक्ष भोग चुके हैं?

समाधान– जी हाँ। इसका आधार है:–

सभी जीवात्माएं चाहे चर–अचर जिस भी योनि में रहें, वो चाहे वृक्ष आदि में हों, चाहे मनुष्य आदि में हों, किसी में भी हों, वो एक से अधिक बार मोक्ष भोग चुके हैं। वेद, उपनिषद्, दर्शन से यह पता चल जाता है।

यह बताइए– जीवात्मा अनादि है या किसी काल–विशेष में उत्पन्न हुआ था? उत्तर है – **जीवात्मा अनादि है।**

यह सृष्टि भी अनादि है या किसी दिन पहली बार बनी थी? उत्तर है – **सृष्टि अनादि है।** यह सृष्टि खत्म होने वाली नहीं है। सांख्य–दर्शन में कपिल मुनि जी ने एक सूत्र बनाया – 'इदानीमिव सर्वत्र नात्यंतोच्छेद:' अर्थात् **जैसे इस समय सृष्टि चल रही है, ऐसे ही हमेशा चलती रहती है।** यह कभी भी पूरी तरह बंद नहीं होती।

अनादि में तो इनफाइनाइट (अनन्त) टाइम है। कोई प्रारंभ ही नहीं, कितना लंबा समय है। इतने लंबे समय में कितनी ही बार जा चुके मोक्ष में, एक बार क्यों? आगे भविष्य में कितने ही बार जायेंगे, आगे भी अनंतकाल है। टाइम की कोई सीमा नहीं है, न भूतकाल में, न भविष्य में। **भूतकाल में कितनी ही बार हम मोक्ष में जा चुके हैं और कितनी ही बार भविष्य में फिर जाएंगे।**

सभी जीवात्मा एक जैसे हैं। सबका स्वरूप मूल रूप से समान है। **जिस काम को एक जीवात्मा कर सकता है, उस काम को दूसरा भी कर सकता है।** अगर एक आत्मा 'महर्षि दयानंद' बन सकता है तो आप भी बन सकते हैं। मैं भी बन सकता हूँ। बारी बारी से सब बन जाएंगे। एक व्यक्ति एम.ए. कर सकता है तो दूसरा क्यों नहीं कर सकता है? दूसरा भी कर सकता है, तीसरा भी कर सकता है। जो पुरुषार्थ करेगा, वह एम.ए. कर लेगा, पी.एच.डी. कर लेगा, एम.एस.सी. कर लेगा, एम.टेक. हो जाएगा, एम.बी.ए. हो जाएगा, डॉक्टर भी बन सकता है, मोक्ष में भी जा सकता है। बारी–बारी से सब मोक्ष में जाएंगे।

इतना मूर्ख कोई जीवात्मा नहीं है कि वो अनंतकाल तक मार खाता ही रहे और कभी भी उसको अक्ल नहीं आए। कितनी मार खाएगा, उसकी भी लिमिट रहती है। बहुत मार खाएगा, फिर खा–खा के थक जाएगा। फिर उसको अक्ल आ जाएगी कि – भई, मैं दुनिया में अब थक गया हूँ। अब और जन्म नहीं चाहिए। **हर एक को अक्ल आ जाएगी, तो बारी–बारी से सब मोक्ष में जाएंगे।**

हमारी बुद्धि भी बढ़ती–घटती है, धीरे–धीरे बुद्धि का विकास होता है। आज से दस वर्ष पहले क्या आपका ज्ञान इतना ही था जितना कि आज है? बढ़ गया न, और अगले दस साल में और कितना बढ़ जाएगा। ऐसे पुरुषार्थ करने से, अनुभव से, ज्ञान का स्तर बढ़ता है। आप में पुरुषार्थ की और थोड़ी ज्ञान–विज्ञान की कमी भी है। ज्ञान बढ़ेगा और व्यक्ति पुरुषार्थ करेगा तो आगे बढ़ जाएगा। और फिर ऐसा भी होता है कि ज्ञान बढ़ने के बाद भी व्यक्ति आलसी–प्रमादी हो सकता है। लेकिन अंत में पुरुषार्थ तो उसे करना पड़ेगा।

ऐसा भी होता है कि व्यक्ति ने कुछ पुरुषार्थ किया, उसकी गति कम है। उसको थोड़ा ज्ञान हुआ, कुछ–कुछ समझ में आया फिर आगे पुरुषार्थ नहीं किया। एक व्यक्ति पुरुषार्थ तो बहुत करता है, पर बुद्धिपूर्वक नहीं करता, बुद्धि भी साथ में चाहिए। कितने ही लोग खूब मेहनत करते हैं। पर धंधे में बुद्धि से काम नहीं करते, इसलिए बहुत नहीं कमा पाते। कई लोग बुद्धि से काम लेते हैं, मेहनत कम करते हैं, वो बहुत कमा लेते हैं। इसलिए **बुद्धि और पुरुषार्थ दोनों चाहिए। ऐसे दोनों को मिलाकर साथ चलेंगे तो फिर जल्दी विकास होगा।**

'जड़ बुद्धि' का मतलब जिसकी बुद्धि तीव्र (Sharp) नहीं है यानी कम बुद्धि वाला है, उसका पिछला संस्कार कमजोर है, इच्छा होने पर भी वह विशेष प्रगति नहीं कर पाता तो वह कम प्रगति (प्रोग्रेस) करेगा। उसे अधिक समय लगेगा, पर सीख तो जाएगा। सीखने में रोक–टोक नहीं है। सब सीख सकते हैं।

दर्शनयोग महाविद्यालय
रोजड़वन, गुजरात

वैदिक प्रार्थना

मा मा हिँसीज्जनिता य: पृथिव्या यो वा
दिवँसत्यधर्मा व्यानट्।
यश्चापश्चन्द्रा: प्रथमो जजान कस्मै देवाय हविषा विधेम।
यजु. 12.102

He who has created this beautiful earth
and the vast splendid skies
which overcast it
and the rich resources of
life-giving sweet water;
To Him we present our
offerings of devotion.
May He protect us always !

यह धरा जिसने रची है, यह सुविस्तृत
व्योम ताना, ज्योति–जगमग, अटल नियमों से
नियंत्रित,
चित्त–आह्लादक सलिल जिसने बनाये
विपुल विस्तृत, न कभी हमको सताये।
अर्चना नैवेद्य अपने हम उसी के हेतु लाये।

thearyasamaj.org

सेवा तथा सामाजिक उत्थान हेतु समर्पित–स्वामी सुमेधानन्द

● डॉ. भवानीलाल भारतीय

क्या कोई मान सकता है कि हरियाणा के देहाती वातावरण में जन्मा, पला, बढ़ा बालक कालान्तर में ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज की शिक्षा से प्रभावित होकर न केवल संस्कृत तथा वैदिक साहित्य का उच्च कोटि का ज्ञान प्राप्त करेगा, किन्तु बुद्ध, शंकर, दयानन्द का आदर्श उपस्थित कर युवावस्था में सन्यास ग्रहण कर स्वयं को 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' प्रस्तुत करेगा अपितु पुत्र, लोक, वित्त इन त्रिविध एषणाओं से मुक्त होने के लिए कटिबद्ध हो जायेगा। यों तो सन्यासी का आदर्श वसुधैव कुटुम्बकम् होने के कारण समस्त धरती ही उसका कार्यक्षेत्र होता है तथापि इस युवा साधु ने समीपवर्ती राजस्थान के श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सीकर आदि जिलों को अपने कार्य के लिए चुना। मेरी उनसे पहली मुलाकात श्रीगंगानगर में आयोजित प्रान्तीय आर्य महा सम्मेलन में हुई जिसके वे संयोजक थे। यहां प्रान्त के अनेक आर्य नेता उपस्थित थे। स्व0 छोटु सिंह ने तो स्वामीजी की पगड़ी और उसके बांधने के स्टाइल को देखकर मुझसे कहा – भारतीय जी यह कोई वेशपन्थी यहाँ घुस आया? मैंने कहा– अकारण कोई धारणा बनाना उचित नहीं। न लिंग धर्म कारणम् (मनु.) मात्र ब्राह्य चिन्ह धर्म का लक्षण नहीं है। यह सेवा भावी, समर्पित आर्य सन्यासी हैं। इनका इस प्रान्त में आना शुभ है।

स्वामी सुमेधानन्द अब प्रमुखतः आर्य समाज और साथ ही आर.एस.एस. से जुड़े। उन्होंने राजस्थान के इस पश्चिमी अंचल में धर्म प्रचार, नशा निवारण, कुरीतियों का मूलोच्छेद आदि अनेक रचनात्मक कार्य किये। अन्ततः उन्होंने सीकर के निकट पिपराली ग्राम को अपने कार्य के लिए उपयुक्त पाया और मुख्य राज मार्ग पर वैदिक आश्रम स्थापित कर सेवा और सामाजिक नव निर्माण का कार्य अधिक तीव्रता से आरम्भ किया। 1997 में स्थापित यह आश्रम नशाबंदी के कार्यक्रम आयोजित कर युवकों में फैली इस बीमारी को दूर करने के लिए यत्नशील रहा। साथ ही प्रौढ़ शिक्षा, गो सेवा, आयुर्वेद पर आधारित चिकित्सा, योग का प्रशिक्षण, अस्पृश्यता निवारण, भ्रूण हत्या विरोध, बाल–विवाह उन्मूलन आदि रचनात्मक कार्य आरम्भ किये। कालान्तर में आप योग ऋषि बाबा रामदेव के कार्यक्रमों से भी जुड़े और यत्र–तत्र व्याख्यान प्रवचनादि से जागृति उत्पन्न की।

आर्य समाज में आपकी गतिविधियां जिला स्तर से आगे बढ़ीं। आपने प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मंत्री तथा प्रधान के पद पर कार्य किया, साथ ही आर्य समाज के वैश्विक संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी के रूप में दिल्ली के दयानन्द भवन से वैदिक धर्म प्रचार को प्रगति दी। कालान्तर में जब मा. भैरोंसिंह शेखावत (तत्कालीन मुख्य मंत्री) के कार्य काल में उदयपुर का नवलखा महल स्वामी दयानन्द के स्मारक के रूप में आर्य समाज द्वारा स्थापित ट्रस्ट को मिला तो उसके प्रमुख ट्रस्टी के रूप में आपने इस भव्य स्मारक के उत्तरोत्तर विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

यों तो हम सन्यासी को श्रेयस्कामी, मोक्षपथ का अन्वेषक तथा सर्व संग परित्यागी मानते हैं, यह उचित भी है, तथापि यह भी स्मरण रखना होगा कि सेवा, परोपकार तथा समाज का हित चिन्तन भी सन्यासी का कर्त्तव्य होता है। विगत में दयानन्द, विवेकानन्द आदि उन चतुर्थाश्रमियों के उदाहरण हमारे समक्ष हैं जिन्होंने नर में नारायण को देखा और लोकहित को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। वर्तमान में भी बिहार के स्वामी सहजानन्द, गोरखपुर की गोरस पीठ के विगत अधिष्ठाता महन्त दिग्विजयनाथ तथा म. अवैद्यनाथ, वर्तमान में योगी आदित्यनाथ, आर्य समाज के स्वामी रामेश्वरानन्द, ब्यावर के स्वामी कुमारानन्द आदि विरक्त महात्माओं ने देश हित तथा समाज हित को सदा महत्व दिया।

स्वामी सुमेधानन्द भी इन्हीं महापुरुषों के पथ पर चल पड़े और आर्यसमाज, आर.एस.एस. तथा अन्य संस्थाओं से सम्बद्ध रहे। इसी का परिणाम है कि सीकर जिले की जनता ने आपको सांसद के गौरवमय स्थान पर पहुंचाया है। मैं व्यक्तिशः स्वामीजी के सम्पर्क में आया हूं और मैंने अनुभव किया है कि जो सेवा और समाज के नव निर्माण का लक्ष्य लेकर वे अब वृहत्तर कर्म क्षेत्र में उतरे हैं, उसमें वे सफल होंगे। स्वामीजी वाणी तथा लेखनी दोनों माध्यमों से अपने विचारों को व्यक्त करने में व्युत्पन्न हैं और सर्वोपरि बात तो यह है कि किसान परिवार में जन्म लेने के कारण आम आदमी की समस्याओं से परिचित हैं।

3/5 शंकर कॉलोनी, श्रीगंगानगर

Thus Spoke Swami Dayanand

- Early marriage must not be allowed, nor the marriage of grown up people without mutual consent.
- Whatsoever or whosoever possesses useful and brilliant qualities is called a devata.
- Infliction of just punishment in exact accordance with the amount of crime is called justice.
- Prayer creates humility, courage, and obtains divine help.
- A man should act in accordance with what he prays for. For example, if he prays for the attainment of highest wisdom, let him do his utmost to attain it.
- Prayer should be addressed to God for the attainment of an object after one has strenuously endeavoured to attain it.
- The world Upasana literally means to come close to. All that is required in order to come close to God by the practice of the Octapartite1 yoga and directly see the Omnipresent, Omniscient God should be accomplished.
- The soul, by coming close to God, is rid of all its impurities, sorrows and griefs, its nature, attributes and character become pure like those of God Himself, just as a man shivering from cold ceases to suffer from it by coming close to fire.
- It behoves all to worship God—praise Him, pray to Him and commune with Him..
- Whatever the good and the great possess—their wealth, their bodies, aye, even their hearts—is at the service of humanity.
- Harmony is the cause of happiness, whilst want of harmony begets misery and pain.
- The Vedas are revealed books. All men should conduct themselves according to their teaching, and when questioned as to his religion let everyone answer that his religion is Vedic, i.e., he believes in whatever is said in the Vedas.
- There is not a single substance that is only positive or only negative. Both positiveness and negativeness always reside in the same object.
- Vedas are eternal.
- The Vedas are revealed books. All men should conduct themselves according to their teaching, and when questioned as to his religion let everyone answer that his religion is Vedic.

Compiled by — Satyapriya, 09868426592

(Sourced from the English translation of 'Satyarth Prakash' by Dr. Chiranjiv Bhardwaj and published as 'The Light of Truth' from D.A.V. Publication Division)

thearyasamaj.org

वेद शास्त्रों में ईश्वर-जीव का स्वरूप

● कृपाल सिंह वर्मा

(1) तीन अनादि सत्ताएं हैं– ईश्वर, जीव, प्रकृति। ईश्वर का स्वरूप सत् चित् आनन्द है। जीव का स्वरूप चित् है तथा प्रकृति का स्वरूप सत् है।

(2) ईश्वर सत् है अर्थात् ईश्वर की सत्ता में क्या प्रमाण है? सृष्टि की रचना ज्ञानपूर्वक है। संसार की छोटी से छोटी रचना में भी विज्ञान छिपा हुआ है। प्रकृति के विज्ञान की नित्य नई-नई खोजें हो रही है लेकिन प्रकृति के विज्ञान का आज तक किसी ने पार नहीं पाया। "ध्यान लगाकर जो तुम देखो सृष्टि की चतुराई को, बात बात में पाओगे उस ईश्वर की सुघड़ायी को।" सृष्टि की रचना करने में बड़े भारी विज्ञान का प्रयोग हुआ है। इसलिए इस अनन्त विज्ञान को धारण करने वाले उस वैज्ञानिक को तो मानना ही पड़ेगा। यदि ज्ञान है तो ज्ञाता अवश्य है। यदि गुण है तो गुणी अवश्य होता है। यदि कोई कहे कि परमात्मा नहीं है तो उसका कथन युक्ति एवं प्रमाण के विरुद्ध है।

(3) ईश्वर चेतन है, जड़ नहीं क्योंकि ज्ञान चेतन का गुण होता है, जड़ का नहीं। ज्ञान का प्रयोग चेतन करता है, जड़ नहीं। क्या तुम इस बात को जानते हो? ये प्रश्न चेतन से पूछा जाता है, जड़ पत्थर से नहीं।

(4) परमात्मा दयालु है। ईश्वर जीवों को सुख देने के लिए ही सृष्टि की रचना करता है। सृष्टि रचना के साथ ही परमात्मा ने पवित्र ऋषियों के हृदय में वेदों का प्रकाश किया। अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा ऋषियों के मन में क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद को प्रकाशित किया। क्या कर्तव्य है? क्या अकर्तव्य है? क्या धर्म है? क्या अधर्म है? क्या सत्य है? क्या असत्य है? सब कुछ वेदों में लिखा है। वेद का पढ़ना, पढ़ाना, सुनना, सुनाना प्रत्येक आर्य का परम धर्म है क्योंकि "धर्मजिज्ञासानाम् प्रमाणं परमं श्रुति"। ऋग्वेद में भूलोक का, यजुर्वेद में अन्तरिक्ष लोक का तथा सामवेद में द्यौलोक का विज्ञान है। आध्यात्मिक (Spiritual Knowledge), आधि दैविक ज्ञान अर्थात् Scientific Knowledge, आधिभौतिक ज्ञान अर्थात् Social Knowledge तीनों विद्याएं वेदों में हैं। परमात्मा की परम दयालुता देखिए कि आत्माओं को कर्म करने को पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान की है। आप कुछ भी कर सकते हैं। परमात्मा अधर्म से बचने की केवल प्रेरणा करता है। परमात्मा की प्रेरणा को मानने अथवा न मानने में हम पूर्ण रूप से स्वतन्त्र हैं लेकिन कर्म फल देने की व्यवस्था परमात्मा ने अपने पास रखी है।

जीवात्मा पुण्य कर्म का फल भोगने में स्वतन्त्र है परन्तु पाप कर्म का फल भोगने में परतन्त्र है। हम पाप कर्मों के जाल में जकड़े हुए ही स्वतन्त्र रूप से कार्य करते हैं। परमात्मा ने सृष्टि की रचना इस प्रकार की है कि जीवात्माओं को अधिक से अधिक सुख मिले। यदि फिर भी हम दुःखी हैं तो वह हमारे पाप कर्मों का फल है।

(5) ईश्वर की सर्वव्यापकता –

वेदशास्त्रों में ईश्वर को सर्वव्यापक बताया है क्योंकि सर्वव्यापक चेतन शक्ति ही इस अनन्त ब्रह्मांड की रचना कर सकती है तथा इसका संचालन कर सकती है। एक देश में रहने वाली कोई साकार शक्ति नहीं। जिसका आकार सीमित है उसकी शक्ति भी सीमित होती है। इसलिए ईश्वर सर्वव्यापक है तथा निराकार है।

(6) परमात्मा को कैसे देखते हैं?

संसार में अनेक वस्तुएं निराकार हैं जिन्हें हम प्रतिदिन देखते हैं। वे हैं भूख, प्यास, सुख एवं दुःख। इनको मन की आँखों से ही देखते हैं, तन की आँखों से नहीं। इसी प्रकार ज्ञानस्वरूप, आनन्दस्वरूप, शक्तिस्वरूप परमात्मा को भी मन की आँखों से ही देखा जाता है। यदि हम एकाग्र चित्त से परमात्मा का ध्यान करें तो हृदय में ज्ञान, आनन्द तथा शक्ति का संचार होने लगता है। जब हम परमात्मा की उपासना करते हैं तो मन आनन्दस्वरूप तथा जब प्रकृति की उपासना करते हैं तो मन सुख-दुःखस्वरूप हो जाता है।

(7) परमात्मा सर्वशक्तिमान तथा सर्वज्ञ है?

परमात्मा बिना किसी की सहायता के सृष्टि का निर्माण करता है। इसलिए वह सर्वशक्तिमान है। वह सर्वज्ञ है क्योंकि सृष्टि निर्माण में किंचितमात्र भी त्रुटि नहीं होती। सूर्य, चन्द्रमा का उदय-अस्त होना तथा ऋतुओं का बदलना आदि अनेक उदाहरण हमारे सामने हैं। परमात्मा सृष्टि की सर्वोत्तम रूप में ही रचना करता है। सर्वोत्तम कभी नहीं बदलता इसलिए प्रत्येक बार सृष्टि की रचना एकसी होती है। "सूर्य चन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमं कल्पयत्।"

(8) **"स पर्यागात् शुक्रंमकायम् अवर्णं अस्नाविरम्**
शुद्धं पाप अविद्धम्, कवि मनिषि, स्वयंभू
परिभः यथातथ्य अर्थान् व्यदघात् शाश्वतिभ्य समाभ्यः"

(9) जीवात्मा का स्वरूप–

आत्मा सत् तथा चेतन है। आत्मा की सत्ता से कोई इंकार नहीं करता। आत्मा चेतन है अर्थात् सुख, दुःख का अनुभव करती है तथा ज्ञान को धारण करती है लेकिन परमात्मा से कुछ भिन्नताएं हैं।

(i) परमात्मा सर्वज्ञ है जबकि आत्मा अल्पज्ञ है। अल्पज्ञता के कारण ही बन्धन में आती है।

(ii) परमात्मा सर्वव्यापक है आत्मा परिछिन्न है अर्थात् एक देशीय है।

(iii) परमात्मा सर्वशक्तिमान है आत्मा अल्प शक्तिमान है।

(iv) परमात्मा आनन्दस्वरूप है। आत्मा जब संसार से जुड़ता है तो सुख दुख स्वरूप तथा जब परमात्मा से जुड़ता है तो आनन्दस्वरूप हो जाता है।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया, समानं वृक्षं परिस्वाजते...

253 शिवलोक,
कंकरखेड़ा, मेरठ
मो – 9927887788

अविस्मरणीय रहेंगे लौहपुरुष सरदार पटेल

● कृष्ण मोहन गोयल

**यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति।।** (गीता 6:30)

'लौहपुरुष' एक ऐसा शब्द है जिससे प्रायः यह अवधारणा बनती है कि ऐसे व्यक्तित्व का व्यक्ति लोहे के समान कठोर होगा और सरदार पटेल दिखायी भी ऐसे ही देते थे। देखने में वे एक शुष्क-से और कठोर से व्यक्तित्व के लगते थे परन्तु भीतर से वे एक नारियल के समान थे जो ऊपर से एकदम कठोर होता है और अन्दर से बिल्कुल कोमल। देश को स्वतन्त्र कराने में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा है। देश की स्वतंत्रता के लिए ही बारदोली सत्याग्रह में उन्होंने अपने कुशल नेतृत्व में विशाल संख्या में लोगों को संगठित किया जिसके कारण उनको 'सरदार' नाम दिया गया जो उस समय की परिस्थितियों के दृष्टिगत एक बहुत ही मुश्किल काम था। परन्तु वे मजबूत इरादों पर दृढ़ रहे और अपने कार्य में सफलता पायी। अपने इन्हीं मजबूत इरादों के कारण ही वे 'लौहपुरुष' कहलाये।

सरदार पटेल पर छत्रपति शिवाजी तथा स्वामी विवेकानन्द जैसे महापुरुषों की अमिट छाप थी। वे इन महापुरुषों के विचारों से पूर्णतया प्रभावित थे। उनकी कार्य पद्धति की तुलना विश्व के महान राजनीतिज्ञ जैसे ब्रिटेन के विंस्टन चर्चिल, अमरीका के आइजनहावर, रूस के खुश्चेव, चीन के चाऊ-एन-लाई से की जा सकती है।

उनके हृदय की कोमलता का श्रेष्ठतम उदाहरण खेड़ा के बाढ़ग्रस्त इलाकों में देखा गया जहां पर लोग चारों ओर से बाढ़ के पानी से घिरे हुए त्राहि-त्राहि कर रहे थे। वहां पर जाकर उन्होंने तन-मन-धन से निस्वार्थ भाव से बाढ़ पीड़ित लोगों की सेवा की। वहां पर उन्होंने शरणार्थियों के लिए कैम्प, भोजन, पानी आदि की व्यवस्था की और बड़ी कुशलता के साथ उनकी सहायता के लिए स्वयंसेवियों की एक बहुत बड़ी फौज बना दी।

सरदार वल्लभभाई पटेल का जीवन बहुत ही सादगी भरा हुआ था। उनका बचपन गुजरात के नाडियाड में बीता। वे भलीभांति जानते थे कि गरीबी क्या होती है। वे अपने जीवन में अपने रहने के लिए एक मकान तक नहीं बना पाये। वे अहमदाबाद में एक किराये के मकान में रहा करते थे। सन्तान के रूप में उनके एक पुत्र दहया और पुत्री मणिबेन थी। वे अपनी विपरीत परिस्थितियों के कारण अपने जीवन काल में उसका विवाह तक नहीं करा पाये। उनकी सादगी का इससे उत्तम उदाहरण अन्य कोई और नहीं हो सकता कि जिस समय उनका देहावसान हुआ उनके बैंक खाते में मात्र दो सौ आठ रुपये थे।

इनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। फिर लन्दन जाकर इन्होंने बैरिस्टरी की पढ़ाई पूर्ण की। उसके पश्चात् अहमदाबाद में रह कर वकालत करने लगे।

इनके जीवन की घटना है कि एक

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

thearyasamaj.org

आधुनिक युग के वेद भाष्यकार महर्षि दयानन्द की वेद-मन्त्रार्थ दृष्टि

● डॉ. चन्द्रकान्त गर्जे

महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व और कृतित्व के अनेक पहलू हैं। वे आधुनिक युग के वेद भाष्यकार थे; युगदृष्टा, युग प्रर्वतक थे। वे राष्ट्र के उद्गाता थे, पुनर्जागरण काल के पुरोधा थे। उनकी सत्य, वेद, ईश्वर में अगाध श्रद्धा थी। वे वेद-अध्येता थे, ज्ञाता थे; उनकी वेद-मन्त्रार्थ दृष्टि भी निराली थी। दयानन्द की दृष्टि में वेद ईश्वर की वाणी है, अपौरुषीय, नित्य है।

'वेद' शब्द की व्युत्पत्ति 'विद' धातु से होती है। 'विद' का अर्थ है ज्ञान, सत्ता लाभ और विचार। प्राचीन भारतीय परम्परा के अनुसार ज्ञान, विद्या, विज्ञान सृष्टि के प्रारम्भ के पूर्व ही है। ज्ञान आदि से है। ईश्वर ने विश्वकल्याण के लिए सर्वप्रथम चार ऋषियों के हृदय में ज्ञान का प्रकाश किया। वे ऋषि थे- अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा। इन ऋषियों ने ही ईश्वर के दिए हुए- व्यापक, शाश्वत और सत्य ज्ञान को प्रकाशित किया, उसे वेद-मन्त्र रूप में मूर्त किया। अब तक कई विद्वानों ने वेद ज्ञान की गहराई को नापने का प्रयास किया, अपनी अपनी विद्वता से प्रकाशित भी किया किन्तु महर्षि दयानन्द की वेद-सत्यार्थ दृष्टि अपना नहीं सके। महर्षि दयानन्द ने वेद अध्ययन के बलबूते पर यह सिद्ध किया कि वेदों में सभी सत्य, विद्या, ज्ञान, विज्ञान विद्यमान है। इसका मन्तव्य है कि वेद सभी सत्य विद्याओं के भण्डार हैं।

वेदों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में ऋग्वेद कहता है-

"तस्य, मात्याज्ञात्सर्वहुत ऋचः समानि जज्ञिरे।

छन्दासि जहिरे तस्या द्यजुसास्या दयाजत।।

(ऋग्वेद 10.20.2)

अर्थात् चारों वेदों की उत्पत्ति परमात्मा से ही हुई है। यही मन्त्र यजुर्वेद में भी पुनरुक्त हुआ है। महर्षि दयानन्द कहते हैं- ईश्वर सर्व शक्तिमान है; उसी से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, और अथर्ववेद- ये चारों उत्पन्न हुए (ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका - वेद उत्पत्ति विषयक)। उन्होंने अपने ग्रन्थ-"सत्यार्थ प्रकाश" में प्रश्नोत्तर का सहारा लिए कहा है- "वेद किन ग्रन्थों का नाम है?" उत्तर में उन्होंने कहा है- "ऋक्, यजुः, साम और अथर्व- मन्त्र संहिता का नाम है, अन्य कोई नहीं।"

वेद के प्राचीन भाष्यकारों में आचार्य यास्क (ईसा पूर्व 500) आचार्य दुर्ग, आचार्य स्कन्द स्वामी, आचार्य महेश्वर, आचार्य उद्गीथ, आचार्य बररूचि। मध्ययुगीन वेदभाष्यकारों में आचार्य बेंकटरमन, आचार्य आस्थानन्द, आचार्य सायण, आचार्य उबर, आचार्य महीधर। पाश्चात्य वेदभाष्यकारों में- ए.बी. बोस, विल्सन, ग्रासऑन, लुडस विग, गिफीथ, मैक्समूलर आदि हैं। आधुनिक काल में महर्षि दयानन्द, पं. सातवलेकर, जयदत्त वेदालंकार, क्षेमकरण, त्रिवेदी, हरिशंकर, डॉ. रामनाथ वेदालंकार आदि। उपर्युक्त आधुनिक वेद भाष्यकारों में (दो एक छोड़कर) महर्षि दयानन्द का नाम उल्लेखनीय है।

समूचे भारत में ब्रिटिशों की सत्ता थी। इस सत्ता में ब्रिटिशों की मिशनरी जील, मनीपावर, मिलिट्री पावर, मैकाले की शिक्षानीति, मैक्समूलर की धर्मनीति दीख पड़ती है (पांच एम. पावर)। ऐसे युग में, ई.स. 1824, गुजरात में टंकारा ग्राम के पौराणिक परिवार में जन्मे मूलशंकर (महर्षि दयानन्द) ने अपनी आयु के लगभग 22 वर्ष में सच्चे शिव के दर्शन (ईश्वर) के लिए अपना गृह त्यागा था। ई.स. 1860 में मथुरा के प्रज्ञाचक्षु, वैदिक व्याकरण के भास्कर स्वामी विरजानन्द के शिष्य बने। उन्होंने स्वामी विरजानन्द के सान्निध्य में आचार्य यास्क के निरुक्त, निघण्टु, ब्राह्मण ग्रन्थ, पतंजलि के ग्रन्थ, वेद आदि "आर्य" ग्रन्थों का विधिवत अध्ययन किया था। उन्होंने (छोटे मोटे) लगभग 32 ग्रन्थों की रचना की। उन ग्रन्थों में प्रमुख ग्रन्थ हैं- सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, वेदभाष्यम्, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, ऋग्वेद भाष्य (7.62.2 तक), यजुर्वेद भाष्य भ्रांति निवारण, अष्टाध्यायी भाष्य आदि। ये ऐसे ग्रन्थ हैं जिनमें वेद और वैदिक संस्कृति विशेष रूप से मुखरित हुई है। स्वामी विरजानन्द जी के मार्ग दर्शन तथा महर्षि दयानन्द के वेद अध्ययन के कारण वेदों को सही अर्थ में समझने के लिए उन्हें दृष्टि प्राप्त हुई।

प्रायः यह देखा जाता है कि एक ही मन्त्र उसी रूप में या थोड़े से पाठभेद से यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद में मिलता है। क्या यह पुनरुक्ति दोष है? कदापि नहीं। चारों वेदों में एक ही मन्त्र की समानता हो, पर ये चारों वेदों के मंत्र भिन्न भिन्न अर्थ की अभिव्यक्ति करने वाले हैं। इसके लिए शब्द ज्ञान, ऋषि देवता, छन्द और स्वर का ज्ञान, प्रसंग, विषय, प्रकरण का ज्ञान होना आवश्यक है। यह भी ध्यान देने की आवश्यकता है- मन्त्र के पूर्व का विषय, प्रसंग, प्रकरण कौन सा है। महर्षि दयानन्द ने वेद-मन्त्रार्थ के इन रहस्यों को गुरु विरजानन्द के सान्निध्य में जाना था। महर्षि दयानन्द ने वैदिक संस्कृत के यौगिक और यौगिक रूढ़- अर्थ को ग्रहण किया था न कि रूढ़ शब्दों का।

लेख के ऊपरी अंश में प्राचीन, मध्ययुगीन तथा पाश्चात्य वेद भाष्यकारों के नामों का उल्लेख किया गया है। अधिकांश वेदभाष्यों की वेद मन्त्रार्थ दृष्टि एकांकी थी, वैदिक व्याकरण के अनुसार नहीं थी। न ही अन्यान्य ग्रन्थों का अध्ययन ही था। वे वेद को मात्र यज्ञ तथा धार्मिक कर्मकाण्ड तक ही सीमित रखे हुए थे। वे वेद में पशुबलि के हिमायती थे, वेदों में पशु हिंसा, मांसाहार के विश्लेषक थे। वे "अज" का अर्थ बकरे के रूप में करते थे। आज वैज्ञानिक युग में अनेक मन्दिरों के सम्मुख "अजबलि" दी जाती है- केवल "अज" शब्द को न जानने के कारण। "अज" का अर्थ है "बीज"। वेद में वर्णित गौतम और अहिल्या के सन्दर्भ में बलात्कार की भावना दीख पड़ती है। वे यम-यमी-भाई-बहन के बीच मैथुनी सम्बन्ध स्थापित करते रहे। वेदों में "स्वर्ग और नरक" की कल्पना की जा रही थी, तो कभी सुर-असुर में युद्ध की कथा देखी जा रही थी, तो कहीं नाम सदृश्य के कारण इतिहास ढूंढ़ा जा रहा था।

इन भाष्यकारों ने वेदों का अध्ययन जरूर किया था, पर वेद मन्त्र के वास्तविक अर्थ को जाने बिना क्योंकि इन्होंने वेद के समान मंत्रों में भिन्न-भिन्न अर्थ-अभिव्यक्ति की कल्पना ही नहीं की थी। पाश्चात्य वेदभाष्यकारों की भूमिका भी अलग नहीं थी। उन्होंने भी कहना प्रारम्भ किया कि वेद गड़रियों के गीत हैं, वेदों में मूर्खों की बातें निहित हैं। इन गणना के पीछे वेदों को बाइबल से निकृष्ट हैं- यह साबित करना था। वेद-अध्ययन के अभाव में वेदों के नाम पर मात्र कर्मकाण्ड ही आजीविका साधन बन गया था। समाज में अनेक विघातक, अन्धश्रद्धा, रूढ़ियाँ घर कर गई थीं। यह सब अवैदिक प्रक्रिया मूल वेद को समाप्त ही कर चुकी थी। वेद का अस्तित्व न के बराबर हुआ था। ऐसे समय महर्षि दयानन्द ने वेद के वास्तविक स्वरूप को अभिव्यक्त करना अपना कर्तव्य माना।

महर्षि दयानन्द की वेद मन्त्रार्थ शैली काफी भिन्न रही है। वेद-मन्त्र के एक एक शब्द का अर्थ स्पष्ट करना, शब्द समूह का अर्थ स्पष्ट करना और समूची ऋचा (मंत्र) को व्याख्यायित करना, यह उनकी मन्त्रार्थ शैली रही है। इस शैली का अनुसरण करते समय उनकी आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौमिक प्रक्रिया देखी जा सकती है। उदाहरण- "सविता" शब्द का आध्यात्मिक अर्थ है- "जीवात्मा", "केन" या "प्राण", परमात्मा आदि। आधिदैविक अर्थ है - "सूर्य" और आधिभौतिक अर्थ है राजा, सभाध्यक्ष, विद्वान् आर्य आदि। दयानन्द ने वेद मन्त्रों के ऐसे अर्थ किये हैं जिनका समाज-जीवन से सम्बन्ध है। उनकी दृष्टि में स्वर, लुप्त, उदात्त, अनुदात्त, स्वस्ति आदि मन्त्रार्थ में सहायक सिद्ध होते हैं। उनके द्वारा किये हुए मन्त्रार्थ काल्पनिक या अपनी इच्छानुसार नहीं है अपितु मन्त्रार्थ का आधार है- ब्रह्म, याज्ञवल्क्य, यास्क, जैमिनी, पतंजलि, निघण्टुकार आदि के ग्रन्थ हैं।

वेदार्थ रूप को स्पष्ट करने के लिए ये ग्रन्थ महत्वपूर्ण हैं ही, किन्तु निघण्टु और यास्क निरुक्त ग्रंथ की अपनी अलग ही विशेष है। "निघण्टु" एक वैदिक शब्दों का एक संचय ग्रन्थ है- वैदिक कोश है। इसमें ऋग्वेद के महत्वपूर्ण एवं क्लिष्ट 1558 शब्दों के अर्थ दिये हैं। गौ शब्द के 11 नाम (पृथिवीवाचक अर्थ में), "श्लोक" शब्द के 27, अन्तरिक्ष के 16, रश्मि के 15, उषा के 16, दिन के 12, मेघ के 30, वाक् के 57, जल के 101, नदी के 37, कर्म के 26, मनुष्य के 25, अन्न के 28, धन के 28, संग्राम के 26, यज्ञ के 15 अर्थ दिये गये हैं। इसी तरह 'निरुक्तम्' यह वेद नहीं है, किन्तु वेद के समान ही महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। वेद-मन्त्रार्थ को जानने के लिए "निरुक्तम्" का अध्ययन करना आवश्यक है। महर्षि दयानन्द ने इन ग्रन्थों को जानने के लिए "निरुक्तम् का अध्ययन करना आवश्यक है। महर्षि दयानन्द ने इस ग्रन्थों का गंभीरता से अध्ययन किया था। उन्होंने अग्नि" शब्द का 170 अर्थ किये हैं। अग्नि चूल्हे में जलने वाली अग्नि न होकर विज्ञान क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली अग्नि है।

ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रन्थ-ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका प्रश्नोत्तर के अन्तर्गत कहा है- "वेद मन्त्रों के ऊपर ऋषि, देवता, छन्द, स्वर का उल्लेख है। ये मन्त्रार्थ को स्पष्ट करने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। "ऋषि" का अर्थ है कहने वाला- ब्रह्मा, अर्ध्वयु, सामगान करने वाला। वह मंत्र दृष्टा है, मंत्र कर्ता ईश्वर नहीं। "देवता"

शेष पृष्ठ 11 पर

thearyasamaj.org

सत्यार्थप्रकाश के आर्यावर्त्तीय मतों के खण्डनमण्डन समुल्लास की महर्षि दयानन्द लिखित महत्वपूर्ण अनुभूमिका

● मनमोहन कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सन् 1875 में आर्य समाज की स्थापना की थी। उन्होंने अपनी वेदों पर आधारित मान्यताओं व सिद्धान्तों का बोधक ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" लिखा है जो विश्व साहित्य में अद्वितीय है। यह एक प्रकार से विश्व में शान्ति का संविधान है। इस ग्रन्थ के 11वें अध्याय की अनुभूमिका में लिखे गये शब्दों को, प्रासंगिक एवं महत्वपूर्ण होने के कारण, ज्ञानार्थ व विचारार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं।

महर्षि दयानन्द लिखते हैं– **"यह सिद्ध बात है कि (सन् 1875 से) पांच सहस्र वर्षो के पूर्व वेदमत से भिन्न दूसरा कोई भी मत (संसार में) न था, क्योंकि वेदोक्त सब बातें विद्या से अविरुद्ध हैं। वेदों की अप्रवृत्ति होने के कारण महाभारत का युद्ध हुआ। इनकी अप्रवृत्ति से अविद्याऽन्धकार के (कारण) भूगोल में विस्तृत होने से मनुष्यों की बुद्धि भ्रमयुक्त होकर जिसके मन में जैसा आया, वैसा मत चलाया।"**

उन सब मतों में 4 चार मत अर्थात् वे क्रम से एक के पीछे दूसरा, तीसरा व चौथा चला है। अब इन चारों की शाखा एक सहस्र से कम नहीं है। इन सब मतवादियों, इन, चेलों और अन्य सबको परस्पर सत्याऽसत्य के विचार करने में अधिक परिश्रम न हो, इसलिये यह (सत्यार्थ प्रकाश) ग्रन्थ बनाया है। जो–जो इसमें सत्य–मत का मण्डन और असत्य का खण्डन लिखा है, वह सबको जनाना ही प्रयोजन समझा गया है। इसमें जैसे मेरी बुद्धि, जितनी विद्या और जितना इन चारों मतों के मूल ग्रन्थ देखने से बोध हुआ है, उसको सबके आगे निवेदन कर देना मैंने उत्तम समझा है, क्योंकि विज्ञान गुप्त (लुप्त व नष्ट) हुए का पुनर्मिलना सहज नहीं है। पक्षपात छोड़कर इसको देखने से सत्याऽसत्य मत सबको विदित हो जाएगा। पश्चात् सब अपनी–अपनी समझ के अनुसार सत्य मत का ग्रहण करना और असत्य मत को छोड़ना सहज होगा। इनमें से जो पुराणादि ग्रन्थों से शाखा–शाखान्तररूप मत आर्य्यावर्त्त देश में चले हैं, उनका संक्षेप से गुण–दोष इस (सत्यार्थ प्रकाश के) 11वें समुल्लास में दिखाया जाता है।

इस मेरे कर्म से यदि उपकार न माने तो विरोध भी न करें। क्योंकि मेरा तात्पर्य किसी की हानि वा विरोध करने में नहीं किन्तु सत्याऽसत्य का निर्णय करने–कराने का है। इसी प्रकार सब मनुष्यों को न्यायदृष्टि से वर्तना अति उचित है। **मनुष्य–जन्म का होना सत्याऽसत्य के निर्णय करने–कराने के लिये है, न कि वादविवाद, विरोध करने–कराने के लिये।**

इसी मतमतान्तर के विवाद से जगत् में जो–जो अनिष्ट फल हुए, होते हैं और होंगे, उनको पक्षपातरहित विद्वज्जन जान सकते हैं। **जब–तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मतमतान्तर का विरुद्धवाद न छूटेगा तब तक अन्योऽअन्य को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और विशेष विद्वज्जन ईर्ष्याद्वेष छोड़ सत्याऽसत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना–कराना चाहें तो हमारे लिये यह बात असाध्य नहीं है।**

यह निश्चय है कि इन विद्वानों के विरोध ही ने सबको विरोधजाल में फंसा रखा है। यदि ये लोग अपने प्रयोजन में न फंसकर सबके प्रयोजन को सिद्ध करना चाहें तो अभी ऐक्यमत हो जायें। इसके होने की युक्ति (स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश शीर्षक से) इस ग्रन्थ की पूर्ति में लिखेंगे। **सर्वशक्तिमान् परमात्मा एक मत में प्रवृत्त होने का उत्साह सब मनुष्यों के आत्माओं में प्रकाशित करे। (अलमतिविस्तरेण विपश्चिद्वरशिरोमणिशु)"**

महर्षि दयानन्द द्वारा 11वें समुल्लास में ही भारत के प्रति गौरवगान करते हुए निम्न स्वर्णिम–महत्वपूर्ण वाक्य भी लिखे गये हैं–

"यह आर्य्यावर्त्त देश ऐसा है जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है। इसीलिये इस भूमि का नाम सुवर्णभूमि है क्योंकि यही सुवर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है। इसीलिये सृष्टि की आदि में आर्य्य लोग इसी देश में आकर बसे। इसलिये हम सृष्टि विषय (सत्यार्थ प्रकाश का आठवां समुल्लास) में कह आये हैं। कि आर्य्य नाम उत्तम पुरुषों का है और आर्य्यो से भिन्न मनुष्यों का नाम दस्यु है। जितने भूगोल में देश हैं, वे सब इसी देश की प्रशंसा करते हैं। और आशा रखते हैं। पारसमणि पत्थर सुना जाता है, यह बात तो झूठी है, परन्तु आर्य्यावर्त्त देश ही सच्चा पारसमणी है कि जिसको लोहेरूप दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण; अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।"

हम आशा करते हैं कि पाठक महर्षि दयानन्द के इन निष्पक्ष एवं उपादेय विचारों को पसन्द करेंगे।

196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोन: 09412985121

☞ पृष्ठ 07 का शेष

अविस्मरणीय रहेंगे ...

बार सरदार पटेल अदालत में खड़े हुए किसी केस पर बहस कर रहे थे। तभी उनके किसी निकट सम्बन्धी ने उनके पास आकर उनके कान में कुछ कहा और एक कागज हाथ में दे दिया। उन्होंने वह कागज खोल कर देखा, पल भर को तो वे ठिठके, फिर उसको मोड़कर अपनी जेब में रख लिया और फिर बहस में लग गये जैसे कि कुछ हुआ ही न हो। दो घंटे की बहस के बाद उन्होंने मुकदमे को जीत लिया। उसके बाद उनकी आंखों से आंसू निकल आये। जब न्यायाधीश, वकीलों व अन्य लोगों ने उनसे इस विषय में पूछा तो उन्होंने उनकी पत्नी के निधन के बारे में बताया। इस पर उनसे अपने मुकदमे को न छोड़ने का कारण पूछा गया तो वे बोले कि उस समय तो मैं अपना फर्ज निभा रहा था जिसका मेरे मुवक्किल ने शुल्क दे दिया था। मैं उसके साथ अन्याय कैसे कर सकता था? ऐसे ही कर्तव्यनिष्ठ, दृढ़ निश्चयी पुरुष ही 'लौहपुरुष' बना करते हैं और ख्याति अर्जित करते हैं।

1920 में उन्हें गुजरात कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष चुना गया और तब से वे 1945 तक इसके अध्यक्ष रहे। गांधी जी के असहयोग आन्दोलन में उन्होंने लगभग तीन लाख लोगों की भागीदारी सुनिश्चित की और इसके लिए उस समय लगभग डेढ़ करोड़ रुपये का चन्दा इकट्ठा किया। यही काल था जब उन्होंने विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया और अपने पुत्र दहया तथा पुत्री मणिबेन सहित खादी को अपना लिया।

1936 में समाजवाद के विषय को लेकर उनमें और पंडित नेहरू में मतभेद उत्पन्न हो गये थे। इसी प्रकार 1938 में उनके सुभाष चन्द्र बोस के साथ भी मतभेद हो गये थे और इसमें उन्होंने गांधी जी का साथ दिया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में वल्लभभाई पटेल को गृहमंत्री पद सौंपा गया। उस समय देश में 565 देशी छोटी–बड़ी रियासतों का अलग–अलग प्रभुत्व था। जब भारतीय संविधान तैयार किया जा रहा था तो गृहमंत्री सरदार पटेल ने समस्त देशी छोटी–बड़ी रिसायतों के जमींदारों, राजा–महाराजाओं से भारत के संविधान के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त करने को कहा तो अधिकांश जमींदारों, राजा–महाराजाओं ने अपना स्वतंत्र अस्तित्व लेने का निर्णय लिया जो देश की अखण्डता के विपरीत था। हैदराबाद के निजाम ने स्पष्ट रूप से कहा कि मैं अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित करने के लिए स्वतंत्र हूं। इस पर मंत्रिमण्डल में गहनता से विचार हुआ और सरदार पटेल की कूटनीति, विवेक और राजनैतिक कौशल के सम्मुख समस्त जमीदारों, राजा–महाराजाओं को झुकना पड़ा। निजाम हैदराबाद के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही अवश्य करनी पड़ी। इसके लिए समस्त देशवासियों ने सरदार पटेल की भूरि–भूरि प्रशंसा की। देश की उत्तरी सीमा पर स्थित जम्मू–कश्मीर के लिए सरदार पटेल अपनी आखिरी सांसों तक जूझते रहे। सरदार पटेल के असामयिक अवसान के कारण यह निर्णय नहीं हो सका। इसके अतिरिक्त गृहमंत्री के नाते सरदार पटेल ने पाकिस्तान से आये हुए लाखों शरणार्थियों के पुनर्वास और भारत–पाक के अनेक विवादों का निबटारा भी बहुत ही सूझबूझ और साहस से किया।

सोमनाथ के मन्दिर के जीर्णोद्धार में भी उनकी प्रमुख भूमिका रही। सरदार पटेल के देहावसान पर नेहरू जी ने कहा था कि मेरा तो दाहिना हाथ ही टूट गया। सरदार पटेल वास्तव में कर्मयोगी पुरुष थे और गीता के सच्चे उपासक थे।

पिछहत्तर वर्ष की अवस्था में 15 दिसम्बर, 1950 को बम्बई में उनका निधन हो गया। आज भी देश ऐसे महापुरुष को शत–शत नमन करता है।

113–बाजार कोट
अमरोहा–244221

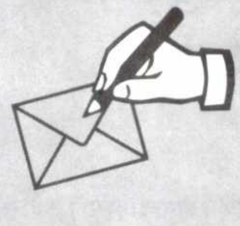

पत्र/कविता

अपने शत्रु के कटु व्यवहार का बदला सद्भावना से दें

किसी के अपकार का बदला उपकार से देना या आंख फोड़ने वाले की बदले में उसकी भी आंख फोड़ देना उचित हो सकता है परन्तु इसके हानिकारक प्रभाव भी हो सकते हैं। चाहे आप युद्ध जीत लें परन्तु दिल के एक कोने में आपको कुछ खालीपन का अनुभव होता है और लगता है कि आपकी कोई मूल्यवान वस्तु आपसे दूर हो गई है। महात्मा गांधी के शब्दों में "आंख के बदले दूसरे की आंख को फोड़ने का परिणाम संसार को अन्धा कर सकता है।" समय बीतने के साथ किसी समय उपलब्धि दिखने वाली यह बात, निराशा व पछतावें में बदल जाती है। ऐसी परिस्थिति में, अपने प्रतिशोध को पूरा करने का दूसरा सुन्दर उपाय भी है और वह है कि हमारा बदला ऐसा हो जाता है कि दूसरे का हृदय परिवर्तन कर दें और आपसी वैमनस्य को खत्म कर आपसी सम्बन्धों को सुधार दे। ऐसा करने से गलत काम करने वाले के मन में एक नया परिवर्तन होता है। अक्सर ऐसा करने पर विरोध मित्रता का रूप ले लेता है जो कि एक उल्लेखनीय उपलब्धि कही जा सकती है। ऐसा करने से हमारे मित्रों की संख्या में वृद्धि होती है और यह कहने की आवयकता नहीं कि जिसके जितने अधिक मित्र होते है वह उतना ही अधिक इस धरती पर स्वयं को सुखी व सन्तुष्ट अनुभव करता है।

जैसा हम जानते है बर्लिन की दीवार पूर्वी बर्लिन और पश्चिमी बर्लिन को बांटती थी। कुछ पूर्वी बर्लिन वासियों ने पश्चिमी बर्लिन वासियों के प्रति गहरा द्वेष भाव अपने अन्दर उत्पन्न कर लिया था। इसी द्वेष भाव के कारण पूर्व बर्लिन वालों ने पश्चिम बर्लिन वासियों का अपमान करने के लिए एक ट्रक में कूड़ा, ईंट के टुकड़े और अन्य अनाप शनाप व्यर्थ की वस्तुयें भरकर चोरी छिपे पश्चिमी बर्लिन वासियों को एक टैंकर में भेजीं। जब पश्चिमी ने पूर्वी वासियों को एक ऐसा उपहार भेजने का निर्णय किया जिससे कि उनके किये गये अपमान का उचित बदला परामर्श दिया कि उनके भेजे सामान के बदले में उनको भोजन, कपड़े और चिकित्सा का सामान, दुर्लभ वस्तुयें एवं मूल्यवान पदार्थ भेजे। उन्होंने, उस सामान के साथ एक पत्र भी रखा, जिसमें कहा गया था कि हर कोई अपने सामर्थ्य और बुद्धि के अनुसार देता है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि पश्चिमी बर्लिन के इस उदारपूर्ण कार्य से दोनों पक्षों में विश्वास का भाव एवं अच्छे सम्बन्ध पैदा हुए।

बुद्धिमान मनुष्य महान गुणों को जीवन में धारण करते हैं व उनका पालन करते हैं। एक जनूनी धार्मिक अन्धविश्वासी व्यक्ति समाज सुधारक सन्त स्वामी दयानन्द सरस्वती के अन्धविश्वासों व कुरीतियों के खण्डन एवं सत्य मान्यताओं में मण्डन से चिढ़कर प्राय हर समय चिल्लाकर–चिल्लाकर उनके लिए अपशब्दों व गालियों का प्रयोग करता था। एक दिन स्वामीजी का एक अनुयायी उनके लिए फलों की एक टोकरी ले कर आया। स्वामीजी ने तुरन्त अपने एक अन्य भक्त को पास बुलाया और उसे टोकरी में से कुछ फल ले जाकर उस गेरु वे वेशभूशा वाले व्यक्ति को देने को कहा जो प्रतिदिन उन्हें गालियां दिया करता था। उन्होंने उसे यह संदेश भी भेजा —— कि उसे इन फलों की अधिक आवश्यकता है क्योंकि स्वामीजी के प्रति अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए उसे गालियों देने में अपनी भारी ऊर्जा खर्च करनी पड़ती है। स्वामीजी का भक्त स्वामीजी के उस व्यवहार से चकित रह गया और स्वयं को लज्जित अनुभव करते हुए उनके पास क्षमा मांगने जा पहुंचा। उसका हृदय परिवर्तन हो गया और वह उनका अनुगामी भक्त बन गया। इस घटना से यह सिद्ध होता है कि उदारता व दान आदि गुणों को धारण करने से शत्रु को मित्र में बदला जा सकता है। यह प्रतिशोध के पवित्र तरीके को अपनाने से मिलने वाला शक्ति है।

प्रतिशोध की भावना से अन्धे होकर आंख के बदले आंख लेने की जगह इस प्रकार के प्रेम युक्त मधुर व्यवहार को अपनाकर आज के युग में शत्रुता के रवैये को मित्रता में बदला जा सकता है खास कर जबकि आज द्वेश भावना व इससे उत्पन्न हिंसा ने सबसे परस्पर डर पैदा किया हुआ है। यह स्थिति मानवता के लिए शर्मनाक है।

नीला सूद
231/ सैक्टर–45–ए
चण्डीगढ़ – 160047
9217970381

****

भारत मां की शान बढ़ाओ

वीर शहीदो की कुर्बानी, याद करो नौजवानो तुम!
भारत मां की शान बढ़ाओ, वीर बनो, मर्दानो तुम!!
भारत के उन दीवानों ने, भारी संकट झेले थे!
भारत मां की रक्षाहित शोणित की होली खेले थे!!
कभी मौत से नहीं डरे थे, उन वीरों को जानो तुम!
भारत मां की शान बढ़ाओ, वीर बनो, मर्दानों तुम!!
सांगा अरु प्रताप, शिवा ने, देश का मान बढ़ाया था!
बाबर, औरंगज़ेब दुष्ट अकबर का, दम्भ मिटाया था!!
गोविन्द सिंह बन्दा, नलुवा को, ठीक तरह पहचानो तुम!
भारत मां की शान बढ़ाओ, वीर बनो, मर्दानो तुम!!
तात्या टोपा, तुलाराम, नाना साहब, लक्ष्मी बाई!
देश धर्म हित अंग्रेजों से, लड़े बहादुर बलदाई!!
जगत् गुरु ऋषि दयानन्द के उपकारों को मानो तुम!
भारत मां की शान बढ़ाओ, वीर बनो, मर्दानो तुम!!
पंडित नंदकिशोर गौड, मंगल पांडे थे वीर बड़े!
हंस–हंस करके फांसी खाई, देश भक्त रणधीर बड़े!!
बनो लाजपत श्रद्धानन्द तुम, सुनो! देश दीवानो तुम!
भारत मां की शान बढ़ाओ, वीर बनो, मर्दानो तुम!!
बिस्मिल, शेखर, भगतसिंह ने, भारी लड़ी लडाई थी!
देश धर्म पर भरी जवानी, खुश हो भेंट चढ़ाई थी!!
फैशन की दो होड़ छोड़ तुम, होश करो नादानो तुम!
भारत मां की शान बढ़ाओ, वीर बनो, मर्दानो तुम!!
भारत मां की ललनाओ! पविव्रता धर्म निभाओ तुम!
कौशल्या, सीता, सावित्री, अनुसुइया बन जाओ तुम!!
बनो देवकी, माता कुन्ती, ठान निराली ठानो तुम!
भारत मां की शान बढ़ाओ, वीर बनो, मर्दानो तुम!!
दुर्गा देवी किरण गई बन, रण में तेग बजाओ तुम!
देशद्रोही हत्यारों का, जग से नाम मिटाओ तुम!!
रेखा, हेमा, कैट, दीपिका, बनो न शायरा बनो तुम!
भारत मां की शान बढ़ाओ, वीर बनो, मर्दानो तुम!!
वैदिक धर्मी बनो साथियो! भारी मौज उड़ाओगे!
अगर न दोगे ध्यान दोस्तो! फिर पीछे पछताओगे!!
"नन्दलाल निर्भय" जागो! इंसान बनो, इंसानो तुम!
भारत मां की शान बढ़ाओ, वीर बनो, मर्दानो तुम!!

– पं. नन्दलाल निर्भय
आर्य सदन, बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा)
चलभाष:– 9813845774

क्या भगवान के साथ ठगी करने वाले साथ ले जायेंगे

धन के पीछे धूल चाटने वाला मानव, धर्म और जमीर को बेचकर खाने वाला मानव, मानवीय मूल्यों और नैतिकता का बाते कर, स्वयं ही स्वयं का मजाक बना रहा है। बिना कर्म में पवित्रता लाए, बिना जीवन को श्रेष्ठ बनाए, कैसे मूल्य और ऐसी नैतिकता? मानव की इसी दशा को देखकर ही, भगवान को कहना पड़ा कि हे, अर्जुन यह सब तो मरे पड़े है। ऐसे ही मुर्दे दूसरों को उपदेश देते हैं कि सिकन्दर खाली हाथ गया था, तो क्या भगवान के नाम पर ठगी करने वाले साथ ले जायेंगें? यदि नहीं तो करोड़ों, अरबों की सम्पत्ति का क्या करोगे? इस सम्पत्ति पर वास्तविक हक भूखों का है, उन्हें दे दो, वरना याद रखो, भगवान की लाठी में आवाज नहीं होती लेकिन दर्द ऐसा देती है कि, सारी की सारी चालाकी धरी रह जाती है। धरी रह जायेगी।

अर्जुनः 09213324134

****

☞ पृष्ठ 08 का शेष

आधुनिक युग के वेद ...

शब्द मंत्र का प्रतिनिधि विषय (Subject Matter) है छन्द शब्दों। अर्थ–अभिव्यक्ति में महत्वपूर्ण है। "स्वर" शब्द की संदिग्धता को दूर करने वाले हैं। महर्षि दयानन्द ने ऋषि, देवता, छन्द, स्वर का भी अध्ययन किया था।

वेद मन्त्रार्थ में शब्द भी महत्वपूर्ण के हैं। शब्द, शक्ति, शब्दक्षमता अपने आप में निराली है। निघण्टु में कहा है– एक शब्द के कई अर्थ होते हैं और कई शब्दों का एक अर्थ होता है। महर्षि दयानन्द ने शब्द–शक्ति, शब्द की क्षमता को पहचाना था। इसी कारण वे प्राचीन तथा पाश्चात्य वेदभाष्यकारों को ललकारते हैं।

ऋग्वेद 1–6–2 मंत्र में "अस्य" एक शब्द है। जर्मनी के विद्वान् मैक्समूलर ने "अस्य" का अर्थ समझा नहीं, इसी लिए इस मंत्र की विपरीत व्याख्या की है। महर्षि दयानन्द ने अस्य इस सर्वनामी शब्द से "इन्द्र" देवता का ग्रहण किया है। ऋग्वेद (1–22–20) के मंत्र में "परमम् पदम्" का अर्थ विल्सन की दृष्टि से भिन्न हैं, वे इस शब्द से स्वर्ग अर्थ नहीं लेते, मगर ऋषि दयानन्द ने इस शब्द का अर्थ "स्वर्ग" ग्रहण किया है, तभी तो उनका मन्त्रार्थ दोष रहित है।

महर्षि दयानन्द की वेद–मन्त्रार्थ दृष्टि के केवल दो उदाहरण यहाँ पर दिये गये हैं। उन्होंने "ऋग्वेद भाष्य" में ऐसे अनेक मंत्रों को उदाहरण के रूप में अभिव्यक्त किया है।

इतिहास में एक ऐसा ही युग आया था, जिसमें बौद्ध, जैन सम्प्रदायों का बोलबाला था। उस समय आद्य शंकराचार्य ने, वैदिक धर्म को पुनः स्थापित करने का अथक प्रयत्न किया था, उनको इस प्रयत्न में ही अपने प्राण खोने पड़े थे। उनके अनन्तर एक ऐसा ही युग पुनः आया, जिसमें अनेक अवैदिक रूढ़ियाँ समाज में पनपने लगी थीं। केवल कर्मकाण्ड शीर्षस्थान पर था। वेदों का अस्तित्व ही प्रायः समाप्त हुआ था। यह धारणा बन गई थी कि वेदों का अपहरण राक्षसों ने किया। ऐसे ही समय आधुनिक काल में महर्षि दयानन्द का आविर्भाव हुआ। उन्होंने वेदों के द्वार सबके लिए खोले। यह घोषणा की कि वेद समस्त ज्ञान का मूल है। "यथेमात्रं कल्याणी पाबदानी" (यजुर्वेद 26.2) अर्थ है कल्याणकारी वेदवाणी जन मात्र के लिए है न कि समाज के एक विशिष्ट वर्ग तक। वेद सब सत्य विद्याओं का भण्डार है– इस वैदिक तत्व को विश्व के सम्मुख रखा और कहा कि वेदों की ओर लौटो। आज विज्ञान सत्य विद्याओं से युक्त है – वह रसायन शास्त्र, भौतिक विज्ञान, सूक्ष्म जीवन विज्ञान, वनस्पति– कृषि विज्ञान, गणित विद्या, सौर विद्या आदि की गहराई में पहुँचने का प्रयास कर रहा है – परिणामतः वेद के कारण ही विज्ञान युग के नये अध्याय का प्रारम्भ हो चुका है। यह दृष्टि प्रदान करने वाले प्रथम आचार्य हैं– महर्षि दयानन्द। इसी प्रयास में उनके भी प्राण प्रखेरू उड़ गये। उन्हें नन्हीं भगतन, महाराज जसवन्त सिंह, (जोधपुर) ने विष दिया, जिसके कारण उन्हें अपने प्राण ई. स. 1883 (कार्तिक अमावस्या संवत् 1940 मंगलवार संध्या 6 बजे) त्यागने पड़े। अन्तिम वाक्य था "ईश्वरेच्छा"। मनु, व्यास, याज्ञवल्क्य, और जैमिनी की उज्ज्वल परम्पराओं में महर्षि दयानन्द ने अपने प्राण त्यागे।

निन्दन्तु नीति निपुणा यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्यायात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।।
(भर्तृहरि–नीति शतक 34)

11– भोसले इलायट, भोसले नगर,
पुणे–411007 (महाराष्ट्र)
दूरभाषः 09421446388

मान्य आचार्य उमाकान्त उपाध्याय को श्रद्धांञ्जलि–

साथ बितायी रात हुई न कोई बात

गुरुकुल कांगड़ीविश्वविद्यालय हरिद्वार का स्थापना शताब्दी समारोह सन् 2002 में आयोजित हुआ था। उसमें भाग लेने के लिए मैं सपरिवार अलीगढ़ से ट्रेन के शयनयान में रात्रि में सवार हुआ। सामने की शायिका पर एक अत्यन्त सौम्य शान्त व गम्भीर व्यक्तित्व को शयन स्थिति में पहले से विराजमान देखा। हरिद्वार स्टेशन आने पर उन्होंने कोच की खूँटी पर टंगी धोती को उतार कर बाँध लिया और उतर गये। रात्रि में निद्रा–अनिद्रा की स्थिति में एक दूसरे को एक झलक देखते रहे, किन्तु परस्पर कोई परिचय व बात नहीं कर सके। शताब्दी समारोह में मंच से जब उनका परिचय दिया गया, तो पता चला आचार्य श्री उमाकान्त जी साथ साथ यात्रा कर रहे थे। भीड़भाड़ व व्यस्त कार्यक्रम में फिर उनसे सम्पर्क नहीं हो सका। आचार्य जी "आर्य संसार नासिक" के आदि सम्पादक थे। स्थापना के कुछ ही वर्षों बाद से उन्होंने मेरी रचनायें प्रकाशित कर मुझे जो प्रोत्साहन दिया है, वह मेरी सारस्वत–साधना की यात्रा में पाथेय रूप में पोषणकारी रहा है। उनके प्रति मेरी हार्दिक श्रद्धाञ्जलि इन काव्य पंक्तियों में प्रस्तुत हैः – श्रद्धाञ्जलि –

श्री सम्पदा वेदशारदा,
इस भूमि भवानी, पर आई।
उत्थान मान गुरु ज्ञान दिया,
चहुँ ओर आपके मुस्काई।। 1।।

मार्तण्ड उगा पाखण्ड भगा,
आकण्ठ बोध भरपूर मिला।
कान्त शान्त उत्क्रान्त गात का,
व्यक्तित्व विभव शिव शूर खिला।। 2।।

तरुणाई की अंगडाई आ,
संयम सौजन्य सजा लाई।
उत्साह उठा उल्लास बढ़ा,
उत्कर्ष हर्ष आभा आई।। 3।।

पारंगत पुण्य प्रवीण हुए,
महर्षि कृति गिरा अग्रसर की।
ध्यान ध्येय श्रुतिगम्य गेय,
सम्पादन की कला मुखर की।। 4।।

यज्ञ अनल की ज्वालायें उठ,
यश कीर्तिमान लेकर आई।
जीवन में जय जयकार हुआ,
जन जन ने श्रद्धाञ्जलि गाई।। 5।।

देवनारायण भारद्वाज 'देवातिथि'
'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम) रामघाट मार्ग
अलीगढ़ 202002 (उ.प्र.)

निर्विघ्न रूप से अग्रसर हो रहा है सघन साधना शिविर

(1 अक्टूबर 2014 से 30 सितम्बर 2015 तक)

दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड़ के आचार्य श्रद्धेय स्वामी ब्रह्मविदानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता में शुरू हुआ एक वर्षीय सघन साधना शिविर ईश्वर की असीम कृपा, गुरुजनों के आशीर्वाद एवं अनेक महानुभावों के सहयोग से निर्विघ्न रूप से अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहा है। शिविर के प्रारम्भिक काल में ही साधकों को पूज्य स्वामी सत्यपति जी महाराज द्वारा आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है।

शिविर को एक विशेष गति देने में "मौन साधना" सहायक सिद्ध हो रही है। सुव्यवस्थित दिनचर्या, प्राकृतिक वातावरण एवं अनुकूल जलवायु भी साधकों में वैराग्य एवं ईश्वर प्राप्ति के लक्ष्य को प्रोत्साहित कर रही है।

प्रत्येक साधक प्रातः काल की ब्रह्मवेला में उठकर मंत्रोच्चारण, भ्रमण, व्यायामादि नित्यकर्मों से निवृत होकर ईश्वर के समीप बैठने के लिए उत्साहित रहता है। उपासना से मन को स्थिर एवं प्रसन्नचित्त करके, यज्ञानुष्ठान के द्वारा पर्यावरण को शुद्ध एवं पवित्र करता है। तत्पश्चात् वेदपाठ इसी क्रम को आगे बढ़ाता है। आगे वेद स्वाध्याय द्वारा भिन्न भिन्न विद्वानों द्वारा ज्ञान की गंगा का प्रवाह आरंभ होता है।

ध्यान प्रशिक्षण द्वारा आत्मा–परमात्मा के मिलन का शाब्दिक एवं प्रायोगिक अभ्यास का प्रशिक्षण दिया जाता है। इसी क्रम में आगे विवेक वैराग्य के सत्र में ईश्वर–जीव–प्रकृति आदि अनेक विषयों की चर्चा संक्षिप्त रूप में की जा चुकी है।

मध्यान भोजन एवं विश्राम के पश्चात् स्वाध्याय एवं निदिध्यासन के अभ्यास द्वारा चिन्तन की स्थिति को गहन बना रहे हैं। ऐसे दार्शनिक विषयों को अत्यन्त सरलता से समझने एवं व्यावहारिक स्तर पर प्रयोग हेतु विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है।

श्रमदान द्वारा निष्काम कर्म का भाव संस्कारित होता है। सायंकाल में भी पुनः भ्रमण, व्यायाम इत्यादि करके सन्धि वेला में ईश्वर में समीप बैठकर उसकी स्तुति–प्रार्थना– उपासना द्वारा आत्मा परमात्मा के मिलन का प्रयास किया जाता है।

सायं भोजन पश्चात् विवेक– वैराग्य के श्लोकों का उच्चारण करने के बाद आत्मनिरीक्षण का सत्र होता है। जिसमें साधक अपनी सम्पूर्ण दिनचर्या एवं उनमें हुई उपलब्धियों व त्रुटियों को सभी के समक्ष प्रस्तुत करता है। तत्पश्चात् गुरु के द्वारा उनका मार्गदर्शन किया जाता है। इसी सत्र में जीवन संबंधित विषयों को अत्यन्त रूचिकर ढंग से रखा जाता है। और अन्त में इन विषयों को श्रद्धेय स्वामी जी ईश्वर ने जोड़ देते हैं। "सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है" इस कथन की पुष्टि स्वामी जी के द्वारा हर विषय में की जाती है।

अन्त में शयनकालीन मंत्रोच्चारण द्वारा ईश्वर का धन्यवाद एवं उसके पश्चात् गुरुजी का भी धन्यवाद कर, सभी शयन के लिए प्रस्थान करते हैं।

इन सभी सत्रों से साधकों के मन में भी जिज्ञासा उत्पन्न होती है उनका सामूहिक एवं व्यक्तिगत समाधान गुरुजनों के द्वारा किया जाता है। गुरुजनों का अत्यंत पुरुषार्थ साधकों के मन को भी साक्षात् पुरुषार्थ की प्रेरणा दे रहा है।

thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2015-17
Posted at N.D.P.S.O. ON 04-05/3/2015
रजिस्ट्रेशन नं. आर0 एन0 आई0 39/57

डी.ए.वी. अबोहर में ऋषि बोधोत्सव

एल.आर.एस. डी.ए.वी. सी. सै. मॉडल स्कूल अबोहर में महाशिव रात्रि पर्व के पावन उपलक्ष्य में **'ऋषि बोधोत्सव'** का पावन पर्व आयोजित किया गया। इस अवसर पर विशेष हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। प्राचार्या श्रीमती कुसुम खुंगर हवन यज्ञ में भव्य यजमान थीं। धर्मशिक्षक अशोक शर्मा 'शास्त्री' जी द्वारा पवित्र वेद मंत्रों का उच्चारण किया गया। यज्ञशाला में आठवीं व जमा एक कक्षा के विद्यार्थियों ने विशेष रूप से भाग लिया।

प्रार्थना सभा में विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए प्राचार्या श्रीमती खुंगर ने कहा कि हमें महर्षि स्वामी दयानंद के जीवन के आदर्शों को अपने जीवन में अपनाना चाहिए व जिस तरह महर्षि दयानन्द जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन सत्य की खोज पांखडों के खण्डन व वेदों के प्रचार में अर्पित किया, वह हम सब के लिए एक प्रेरक पुंज है। हमें उन्हीं के बताए हुए मार्ग पर चलना चाहिए।

पाठ्येतर गतिविधियों की प्रभारी श्रीमती अल्का सतीजा द्वारा **'ऋषि बोधोत्सव'** के इतिहास से विद्यार्थियों को अवगत कराया गया। इस अवसर पर संगीत शिक्षक श्री दिलीप माथुर, नीरज शर्मा, अध्यापिका श्रीमती हरप्रीत कौर व विद्यार्थी गायन दल द्वारा सामूहिक रूप से ऋषि दयानन्द जी के जीवन से संबंधित भजनों का गायन किया। पाठ्यत्तर गतिविधियों की मुख्य प्रभारी श्रीमती आदर्श जैन की देख रेख में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ शांति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पूर्ण हुआ।

डी.ए.वी. पटेल नगर (पश्चिम) में लगा वैदिक चेतना शिविर

चरित्र निर्माण, वैदिक धर्म तथा संस्कृति की रक्षा हेतु डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पश्चिमी पटेल नगर, नई दिल्ली, में वैदिक चेतना शिविर का आयोजन किया गया। कक्षी पांचवी छठी तथा सातवीं के लगभग 180 विद्यार्थियों ने प्रातः 8 बजे से सांय से 4 बजे तक शिविर के कार्यक्रमों में बड़े उत्साह एवं प्रसन्नता से भाग लिया। शिविर का आरम्भ शास्त्री जी ने हवन से किया। मुख्य यजमान प्रधानाचार्या रश्मि गुप्ता जी थी आध्यापिकाओं तथा छात्रों ने

हवन में सामूहिक आहुतियां डालीं। शास्त्री जी ने वैदिक मंत्रों का अर्थ बताकर हवन की विस्तारपूर्वक जानकारी दी। तदोपरान्त रोग आचार्य श्री रोहेल्ला जी ने लगभग घंटे तक अनेक योगासन करवाए। पुस्तकों में से प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी रखी गई। तीनों कक्षाओं को, प्रत्येक को 50 प्रश्न पूछे गये। दोपहर का भोजन पाठशाला में बनवाया गया तथा बच्चों प्रेम से ग्रहण किया। भोजनावकाश के बाद संगीत आचार्य के साथ भजन व देशभक्ति गीत गाए। तीनों कक्षाओं को लघुनाटिका के लिए स्वच्छता, समय का सद्पयोग, अनुशासन, स्त्रीशिक्षा, विद्या अमूल्य है, पुस्तकालय आदि विषय दिये गये थे। सभी प्रतियोगिताओं में कक्षा सातवीं के बच्चों ने अधिक अंक प्राप्त करके प्रतियोगिता जीत ली। विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए प्रधानाचार्य जी ने एक पुरस्कार सबको दिया। अंत में योग आचार्य जी ने चरित्र निर्माण तथा वीर्य की रक्षा हेतु बच्चों को अनेक उपयोगी बातें बताई। लगभग चार बजे मैडिटेशन के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हो गया।

डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय अबोहर में ऋषि बोध उत्सव के उपलक्ष्य में विशेष कार्यक्रम का आयोजन

डी.ए.वी. मैनेजिंग कमेटी, नई दिल्ली के प्रधान श्री पूनम सूरी के आह्वान पर देश के सभी डी.ए.वी. संस्थानों में चलाए जा रहे स्वामी दयानन्द जी के विचारों के प्रसार के अन्तर्गत डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय, अबोहर में महारात्रि के उपलक्ष्य में ऋषि बोधत्सव का आयोजन। कॉलेज प्राचार्या डा. (श्रीमती) विनीता सिंह जी के विशेष सहयोग तथा आर्य युवा समाज की प्रभारी डा. (श्रीमती) उर्मिल सेठी तथा विनीत खुंगर के कुशल नेतृत्व में हवन यज्ञ से आरम्भ हुआ। आए हुए सभी अतिथियों ने आहुति दी। इस कार्यक्रम के विशेष अतिथि श्री वेदप्रकाश शास्त्री जी रहे। बी.एड. छात्रा कीर्ति और वर्षा ने **"शिवरात्रि मुबारक हो सब को ऋषिवर की याद दिलाती है"** भजन प्रस्तुत किया। आर्य युवा प्रभारी डा. उर्मिल सेठी जी ने आए हुए सभी अतिथियों का स्वागत किया। विशेष अतिथि श्री वेदप्रकाश शास्त्री जी ने सभी को ऋषि बोध उत्सव की बधाई दी तथा वेदों के महत्व के बारे में बताया। उन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' के सभी समुल्लासों की क्रमानुसार व्याख्या करके वेदों को जीवन में उपयोगी बताया। डा. सरोज मिगलानी ने 'ओ३म्' शब्द के उच्चारण तथा उपयोगिता के बारे में बताया। डा. सुशील रत्न मिगलानी जी ने स्वास्थ्य पर ध्यान केन्द्रित करवाया तथा इसकी संभाल पर चर्चा की।

इस अवसर पर कॉलेज के विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया जो वैदिक ज्ञान परीक्षा 2014 के आयोजन की मैरिट में आए थे। इसके बाद कॉलेज प्राचार्य डा. (श्रीमती) विनीता सिंह जी ने सभी का आभार प्रकट किया तथा स्वामी दयानन्द के विचारों से अवगत करवाया। उन्होंने बताया कि दयानन्द जी का सम्पूर्ण जीवन ही हमारे लिए पथ प्रदर्शक है। मैरिट में आए छात्र–छात्राओं को बधाई दी। आर्य युवा समाज के विशेष अतिथि श्री वेदप्रकाश शास्त्री जी को दुशाला ओढ़ा कर उनका धन्यवाद किया गया। इस कार्यक्रम में प्राचार्या, स्टाफ मैंबर, श्री वेद प्रकाश शास्त्री (विशेष अतिथि), डा. सुशील रत्न मिगलानी, डा. सरोज मिगलानी, श्रीमती कुसुम खुंगर, श्रीमति सुदेश चावला उपस्थित थे।

डी.ए.वी. नारायण गढ़ में मनाया गया ऋषि बोधोत्सव

डी.ए.वी.सी.सै. पब्लिक स्कूल नारायणगढ़ में आर्य समाज के संस्थापक दयानन्द का जन्मोत्सव श्रदधा और उल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय में यज्ञ किया गया। प्रधानाचार्य श्रीमती मीनाक्षी डोगरा की अध्यक्षता में आयोजित इस उत्सव में स्टाफ सदस्यों व छात्रों ने यज्ञ में आहुतियां डालीं। बच्चों ने भाषण व भजनों के माध्यम से ऋषि दयानंद द्वारा समाज के लिए किए गए महान कार्यों को याद किया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य जी ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि ऋषि दयानंद एक महान समाज सुधारक थे जिन्होंने भारतीय समाज में फैले अधविश्वास व रूढ़िवादी रीति रिवाजों का घोर विरोध किया तथा लोगों को वेदों में मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। समारोह के समापन पर प्रधानाचार्य महोदया ने भजन, भाषण व दसवीं कक्षा में विभिन्न प्रतियोगिताओं के उत्कृष्ट स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम का समापन शांति पाठ से किया गया तथा बच्चों को प्रसाद वितरित किया गया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.**, डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601 सम्पादक – **पूनम सूरी**